दीदी

अप्रैल, १९४७

मूल्य ।)

'दीदी'

वार्षिक मूल्य ३)　　　　एक प्रति ।)

पत्र-व्यवहार का पता—

प्रेमलता देवी सञ्चालिका 'दीदी' इलाहाबाद

विषय-सूची

अप्रेल, सन् १९४७

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सबसे अच्छी और सबसे सस्ती सचित्र मासिक पत्रिका

अनेक प्रान्तीय सरकारों और राज्यों द्वारा कन्या-शालाओं के लिये स्वीकृत।

वर्ष ८ | इलाहाबाद, अप्रेल १९४७ | संख्या ४

गीत

लेखक, श्री "नरेश"

तुम नित्य रूठती हो
पर रूठना न आता।
तुम लाख सोचती हो—
'जब प्राणनाथ आयें,
बोलूँ न आज उनसे
सौ बार वे बुलायें,
पर बात रूठने की
तुमको न याद रहती,
जब स्नेह सिक्त स्वर में
प्रिय मैं तुम्हें बुलाता॥
तुम नित्य रूठती हो
पर रूठना न आता।
जब रुठ कर कभी तुम
चुप म्लान बैठ जातीं,
मैं पूँछता 'हुआ क्या'—
कुछ भी न तुम बतातीं;
पर तुम न रोक पातीं,
अपनी हँसी अधर में,
जब पास आ तुम्हारा
मैं गात गुदगुदाता॥
तुम नित्य रूठती हो
पर रूठना न आता।
जब हो व्यथित कभी तुम
सब रात प्राण रोतीं,
दृग-नीर से निरन्तर
उपधान तुम भिगोतीं;
पर भूल कर सभी कुछ
तुम प्रात मुस्करातीं,
जब देख दृग तुम्हारे
प्रिय मैं तुम्हें मनाता॥
तुम नित्य रूठती हो
पर रूठना न आता।

दोषी कौन ?

लेखिका, श्रीमती शान्ति माहेश्वरी बी० ए०, बी० टी० (शशी)

जो शिक्षित लड़कियाँ किसी विवाहित पुरुष से उसके धन के कारण विवाह करती हैं वे उसकी पूर्व पत्नी की सुखमय गृहस्थी में आग लगाने की अपराधिनी हैं। उन्हें दंड मिलना चाहिये और उनका बहिष्कार होना चाहिये। यही बात इस लेख में विदुषी लेखिका ने सुन्दर ढङ्ग से सिद्ध की है।

पुरुष सैकड़ों वर्षों से स्त्री जाति पर अत्याचार करता चला आ रहा है। उसका स्वभाव ही हो गया है कि वह स्त्रियों को पददलित करे। अपने स्वार्थ के लिये उसने किसी भी धर्म पुस्तक में उन्हें उठाने के लिये कोई समाधान नहीं किया है, बल्कि उन्हें परिताड़ित व लांछित किया है। फिर भी हम देखते हैं कि वही नारी सब कुछ जानने पर भी उसका मनोरञ्जन करती चली आ रही है। कितनी बहिनें हैं जो विवाह की मेंहदी धुलने से पूर्व ही पति से ठुकरा दी जाती हैं। कितनी बहिनें हैं जो पतियों से परिताड़ित होकर कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। आज स्त्रियों में तपेदिक का अधिक होना बताता है कि अपने पतियो के बुरे आचरणों से प्रभावित होकर रात दिन चिंता की आग में धधकती हैं। स्त्रियों को चाहिये कि वह अपनी रक्षा स्वयं करें और अपने जीवन को पददलित होने से बचायें।

महात्मा गांधी ने एक बार लिखा था कि हमारा स्त्री शिक्षा का प्रचार करने का उद्देश्य था कि शिक्षित मातायें वीर व आदर्श सन्तान उत्पन्न करें। मेरे विचार से शिक्षा प्रचार का दूसरा उद्देश्य यह भी था कि समय पड़ने पर शिक्षित स्त्रियाँ अपनी रक्षा कर सकें, अपने स्त्रीत्व को समझ सकें।

आज जिस प्रकार हम पुरुष को देखते है कि अपने धन, सौन्दर्य और आत्मबल से युग युग से नारी को पददलित करता चला आ रहा है। उसी प्रकार नारी भी युग युग से आत्मबल खोकर आज शिक्षित व सामर्थ्य होने पर भी पुरुष की छत्र छाया से बाहार जाना नहीं चाहती है। यही कारण है कि आज उच्च उपाधियों से विभूषित बहिनें पुरुषों के धन, सौन्दर्य व आत्मबल पर अपनी बुद्धि विवेक और शिक्षा को बलिदान कर रही हैं। आज शिक्षित समाज का पुरुष अपने ऐश्वर्य के बल पर वेश्या-गृहों की तरफ न जाकर, शिक्षित नारियों को आकर्षित कर रहा है। आज भी नहीं सीधी सादी बहिनों के जीवन पर कुठारा घात हो रहा है। क्या हम यह नहीं कह सकते हैं कि हमारी शिक्षित बहिनें अपने विवेक व बुद्धि को खोकर शिक्षा को लाँछित कर रही हैं। कितनी ही गृहस्थियाँ इसी कारण अशान्त बनी हुई हैं। क्या इसी का नाम सभ्यता है कि किसी भोली व अशिक्षित बहिन की गृहस्थी में आग लगा देना। अभी कुछ दिन हुये कि एक बहिन जिसे मैं जानती हूँ उसके पति ने एक उच्च उपाधि से विभूषित लड़की से विवाह किया है। उस बेचारी पहली पत्नी के दुःखी जीवन का प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य अन्दाजा लगा सकता है। उसकी दस वर्ष से बसी हुई गृहस्थी क्षण भर में उजड़ गई। उसके पास इस समय अश्रुधारा के सिवा कुछ नहीं है जो कठोर हृदय को पिघला दे। सैकड़ों इस प्रकार के असभ्यता के आचरण हमारे समाज में हो रहे हैं। कल मैंने जब 'दीदी' पत्रिका में पढ़ा कि सेठ डालमियाँ ने अपनी विवेक बुद्धि को धन के मद में छुपा कर एम० ए० पास लड़की से छठवाँ विवाह किया है ? मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। क्योंकि आज के सभ्य युग में ऐसी सैकड़ों घटनाएँ हो रही हैं।

मेरे विचार से पुरुष में इतनी शक्ति नहीं है कि वह किसी भी स्त्री को जो कि उच्च उपाधियों से विभूषित हो उसे उसके पथ से विचलित कर सके। यह तो सब हमारी शिक्षित बहिनों की विवेक, बुद्धि व सभ्यता पर निर्भर करता है। मेरी समझ में नहीं आता वे किसी की सुखमय गृहस्थी को उजाड़ने में क्या उदेश्य रखती हैं ? क्या वे इसका उत्तर दे सकती हैं ? यदि प्रत्येक लड़की यह प्रतिज्ञा कर ले कि वह किसी ऐसे पुरुष से विवाह न करेगी जिसके पहली पत्नी हो तो कानून स्वयं ही बन जायेगा और सुधार भी शीघ्र हो जायेगा। यहां अशिक्षित बहिनों के बारे में न कह कर मेरा यहां कहने का उदेश्य उन बहिनों से है जो अपने को शिक्षित समझती हैं। सभ्यता के नाम पर अपने पथ से विचलित हो रही है। किसी विवाहित स्त्री के जीवन में उसके पति के धन के पीछे आकर्षित होकर विवाह करना सभ्य वेश्या वृति नहीं तो और क्या कहलायेगा ? जो भी शिक्षित लड़की इस प्रकार अपनी उच्च उपाधियों से विभूषित होकर गृहस्थों के अशान्तिमय बना रही हैं उन्हें अवश्य दण्ड मिलना चाहिये। उनका भी जाति बहिष्कार होना चाहिये। हम पाश्चत्य सभ्यता के नाम पर ऐसी बातों को सहन करके चुपचाप होकर बैठ जाते हैं परन्तु क्या योरोप में भी इस प्रकार होता है कि पहली पत्नी के होते हुये विवाह कर लिया जाये। योरोप में कोई भी सभ्य लड़की पहली पत्नी के होते हुये विवाह न करेगी जब तक कि पहली पत्नी को तलाक न दे दिया जाये। यह सिर्फ भारतवर्ष में है कि बेचारी पहली पत्नी घर की चार दिवारी में बैठ कर अश्रुपात करे और दूसरी पत्नी आनन्दमय जीवन व्यतीत करे। क्या इसी का नाम आदर्श सभ्यता और मनुष्यता है ?

पुरुष इसको कैसे समझ सकते हैं कि एक पति से ठुकराये जाने पर हिन्दू नारी की क्या हालत होती है। क्योंकि उसकी तो युग युग से ऐसा करने की प्रकृति हो गई है। परन्तु अब जो शिक्षित बहिनें इस प्रकार सभ्यता के नाम पर कुठाराघात करेंगी उनके लिये आन्दोलन किया जायेगा। उन्हें भी किसी के जीवन को अशान्तिमय बना कर सुख से न रहने दिया जायेगा। स्त्री समाज को अब इसका विरोध करना होगा।

अनुरोध

लेखक, श्री "चञ्चल"

आज तुम फिर गान गाओ।
व्यथित उर मेरा अचानक,
प्रेमलय में बह चलेगा।
'कर्ण-प्रिय' कल रागिनी सुन
लब्ध हूँ यह कह सकेगा।
स्नेह की वीणा उठा लो, अब्य स्वर्गिक स्वर सुनाओ।
आज तुम फिर गान गाओ।

स्नेह परिपरित सरस यह
दीप सम्मुख जल रहा है।
प्रीति पुलकित दीप्त दीपित
दश दिशायें कर रहा है।
वेदना वैषम्य उर की छोड़ मुग्धित मन बनाओ।
आज तुम फिर गान गाओ।

क्लान्त मानस स्वर सुनेगा,
जो सुधा आसव पुजारी।
विश्व सारा मुग्ध होगा,
आज जो है अति दुखारी।
प्राण प्रिय है दूर तुम से, कल्पना ऐसी न लाओ।
आज तुम फिर गान गाओ।

आज मृदु मुस्कान से फिर,
शून्य संसृति को रिझाओ।
डूब कर तुम प्रेम सरिता में,
पुनः चिर मोद पाओ।
अनुराग की वह रागिनी, सप्रेम फिर मुझको सुनाओ।
आज तुम फिर गान गाओ।

इन्द्र की परी

एक पारिवारिक कहानी

लेखक, श्रीनाथसिंह

[१]

नई दिल्ली में जब इंटरिम-गवर्नमेंट कायम हुई, प्रोफेसर वसन्त कुमार भी वहाँ आकर बस गए। इससे पहले ये पूरे ६ साल जेल में रह आये थे। हिन्दुस्तान की शायद ही कोई बड़ी जेल हो जिसमें ये इस बीच में रहने को न भेजे गये हों और फिर कैदियों को भड़काने के कारण वहाँ से न हटाये गये हों।

नई दिल्ली की चहल पहल से दूर एक चौड़ी पर शान्त और एकान्त सड़क पर एक मकान में वे रहते थे। सड़क से मिली हुई एक दालान, उसके बाद एक कमरा और कमरे के पीछे रसोई घर था। उसी में वे अपनी २७ वर्षीया पत्नी सुधा और आठ वर्ष के पुत्र विनोद के साथ रहते थे। प्रोफेसर साहब की उम्र कोई ३३ वर्ष की थी।

ये मकानात असल में नीचे दर्जे के सरकारी नौकरों मालियों, चपरासियों और चौकीदारों के लिये बने थे। इंटरिम गवर्नमेंट में शामिल हुये एक कांग्रेसी मिनिस्टर के प्रयत्न से प्रोफेसर साहब को यह मकान मिल गया था और उसी की कृपा से उन्हें इंटरिम गवर्नमेंट में एक नौकरी मिल गई थी।

अपनी इस स्थिति से प्रोफेसर साहब को घृणा थी अतएव वे दिन का समय प्रायः घर से बाहर ही बिताते थे और रात को चोर की भाँति चुपचाप आकर सो जाते थे। पत्नी और पुत्र को साथ लेकर वे कहीं न जाते थे। पत्नी के पास अच्छी साड़ियाँ न थी और पुत्र के पास भी वैसे अच्छे कपड़े न थे। इस प्रकार माँ बेटे घर में ऊबा करते थे।

इससे पहले पत्नी एक स्कूल में अध्यापिका थीं और उन्होंने उस समय को जब पति जेल में थे धैर्य से काटा था। पर जब जेल प्रवासियों का समय लौटा, उस बेचारी को निराश ही होना पड़ा। कोई मिनस्टर बन कर बढ़िया कारों पर चलने लगा कोई एम० एल० ए० बना। पर प्रोफेसर बसन्त कुमार कुछ न बन सके। इसे उनका दुर्भाग्य कहिये या अयोग्यता। पर खैर उनके लिये भी जीविका का एक साधन निकला, यही क्या कम था।

जब वे जेल गये थे, विनोद सिर्फ एक वर्ष का था। अश्रु-बदना पत्नी की ओर स्नेह भरी दृष्टि फेंक कर उन्होंने पुत्र को चुमकारा था। वह दृश्य आज भी उनकी स्मृति में ताजा था। वे पत्नी को हृदय से चाहते थे। पुत्र को अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते थे।

वह कैंची से कागज के खिलौने काटा करता था।

पर दिल्ली की वर्तमान परिस्थित में वे उन्हें सुखी बनाने में असमर्थ रहे। घर में चौका बर्तन साफ करने वाली महरी भी न थी। सारे काम पत्नी को करने पड़ते। वही बेचारी पड़ोसियों की नजर बचा कर कंट्रोल की दूकानों पर जाती और जो पाती समान ले आती। वह सोचती कि पति को उसकी परवा नहीं है और यह भी सोचती कि पति बेचारा करे क्या?

विनोद ने अपना वक्त काटने के लिये एक काम निकाल लिया था। अनुनय विनय करके माँ से उसने उसकी कैंची माँग ली थी और उस कैंची से कागज के खिलौने काटा करता था। तिरंगा झंडा, हिन्दुस्तान, गांधी जी, चरखा, बैल, हाँथी, घोड़ा, मंदिर, मस्जिद, बहुत प्रकार की आकृतियाँ वह काट लेता था। पड़ोसी चौकीदारों के लड़के उसे घेरे ही रहते थे। किसी को कुछ देता, किसी को कुछ। कैटलग, अखबार, लिफाफा, कापी, जो पाता वही काट डालता। कई बार तो ऐसा हुआ कि प्रोफेसर साहब का प्रातः काल का ताजा अखबार ही उसने काट डाला और वे झल्ला कर रह गये।

[२]

जिस समय की बात हम लिख रहे हैं, देहली का वातावरण बड़ा तूफानी हो उठा था। कोई कहता था मुस्लिम लीग वालों को इंटरिम गवर्नमेंट से हटना पड़ेगा और कोई कहता कि कांग्रेस वालों को ही बोरिया बिस्तर बांधना पड़ेगा। प्रोफेसर बसन्त कुमार के हृदय में भी हल चल मची हुई थी। वे अपमान की यह नौकरी छोड़ कर एक बार फिर जेल में जाना चाहते थे। वह जीवन उन्हें देहली के इस गलाघोटू वातावरण से ज्यादा सम्मान जनक जान पड़ता था। इस पर वे पत्नी से बराबर बहस किया करते थे।

सुधा नहीं चाहती थी कि प्रोफेसर बसन्त कुमार फिर जेल जायँ। परन्तु अपनी इस इच्छा को वह प्रगट न करती थी। और प्रोफेसर साहब चाहते थे कि पत्नी उनसे कहो—"प्यारे जेल जाने का इरादा छोड़ो, अपने बेटे की फिक्र करो।" पर पत्नी के मुख से ऐसी बात वे कभी सुन न सके। दोनों के हृदय अन्दर ही अन्दर पिघले जा रहे थे। पर वे अपनी व्यथा एक दूसरे से न कहते थे।

एक दिन प्रोफेसर साहब ने घर में प्रवेश करते हुये कहा—"सुधा मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं फिर जेल जाऊँगा।"

सुधा चावल बीन रही थी। चावलों में अपना सिर गड़ाये ही रही और जैसे यह रोज की साधारण बात हो बोली—"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"मैं सोचता हूँ, तुम कहाँ रहोगी?"

"जहाँ कहो?"

"तुम अपने पिता के यहाँ बहुत दिन से नहीं गई हो ?"

"नहीं ।"

"वहीं रहो तो कैसा हो ?"

"चलो, पहुँचा आओ।"

"और बेटे तुम ?" प्रोफेसर साहब ने विनोद को प्यार से चूमते हुए कहा।"

"मैं माँ के साथ जाऊँगा। नाना जी की शकल कैंची से काटूँगा। वहाँ बहुत अखबार हैं।"

"नहीं नहीं यह बड़ा शैतान है। इसे मैं अपने साथ नहीं ले जाऊँगी।"

"क्या करता है ?"

"तुम तो घर में रहते नहीं हो इसकी शैतानी क्या जानों ? दिक करता है, काम नहीं करने देता, सोने नहीं देता... ।"

"तो इसे थोड़ी सी अफीम खिला दिया करना ?" प्रोफेसर बसन्त कुमार ने गुस्से से कहा।"

विनोद बीच ही में बोल उठा—"पिता जी, अफीम मुझे फायदा करेगी ? मैं जरूर...।"

बेटे की बात सुन कर प्रोफेसर साहब कुछ लज्जित हुये। उन्हें जान पड़ा, वे पत्नी के प्रति वैसे सदय नहीं जैसे पहले थे। बराबर जेल में रहने से उनका शारीरिक ही नहीं मानसिक स्वास्थ्य भी चौपट हो गया है। वे बिना कुछ कहे घर से बाहर निकल गये।

[३]

प्रोफेसर बसन्त कुमार पाँच दिन की छुट्टी ले आए हैं। सुधा ने अपने पिता के घर जाने की सारी तैयारी कर ली है। विनोद कैंची लिये सारे घर में घूम रहा है। वह कुछ कागज काटने के लिये चाहता है। जाने से पहले वह अपने पड़ोसी लड़कों को उपहार दे जाना चाहता है। प्रोफेसर साहब एक तरफ गुस्से से भरे बैठे हैं और सुधा दूसरी ओर बैठी आँसू बहा रही है। इंटरिम गवर्नमेंट में क्या होगा ? कौन जाने ! पर यहाँ प्रोफेसर की गृहस्थी डगमग हो रही है।

विनोद को मालूम हो गया है कि पिता और माता में लड़ाई हो गई है। उसे यह अच्छा नहीं लगता पर बेचारा बच्चा क्या करे ? माता को सान्त्वना देने के इरादे से वह उसके पास पहुँचा। बोला—"माँ पिता जी से तुम क्यों लड़ती हो ?"

"बेटा मैं नहीं लड़ती। उन्हीं का मिजाज गर्म है ?"

"वे क्या चाहते हैं ?"

"इन्द्र की परी ?"

"इन्द्र की परी कैसी होती है ?"

बहुत सुन्दर स्त्री की तरह। पर उसके पंख होते हैं। जब वह पंख फैला कर स्वर्ग लोक से उतरती है, लोग लड़ना भूल जाते हैं।"

"हूँ। तो मैं इन्द्र की परी बनाऊँगा। एक नहीं बहुत सी। मैं सोचता था कि यहाँ से चलने से पहले मित्रों को उपहार देता चलूँ। अब मैं सबको एक एक इन्द्र की परी दूँगा ताकि किसी के घर में लड़ाई न हो। और बहुत सी साथ लेता चलूँगा। वहाँ भी लोगों को बाटूँगा।"

एक अखबार का टुकड़ा पड़ा था। विनोद ने तत्काल उस पर कैंची चलाई और जैसी आकृति का वर्णन माँ के मुख से सुना था वैसी एक बना कर उससे बोला—"देखो माँ ! ऐसी ही होती है न इन्द्र की परी।"

भरे हुये कंठ से सुधा ने कहा "हाँ मेरे लाल ?"

विनोद सारे कमरे में उछलने लगा—'अभी बनाता हूँ।"

पर कागज कहाँ मिले। एक चिट भी न था। विनोद को स्मरण आया, माँ के बक्स में कुछ पुरानी चिट्ठियाँ पड़ी हैं। दौड़ कर माँ से लिपट कर उसके मुख को चूम कर बोला—"वे पुरानी चिट्ठियाँ ले लूँ।"

"ऐसी होती है पुरुष की जाति" कहते हुए सुधा ने ढकेल कर कहा—"नहीं।"

विनोद जहां का तहाँ खड़ा रह गया। उसकी आँखों में बड़े बड़े मोती उमड़ आये। वह बोला—"माँ तुम उन्हें क्या करोगी ? पुरानी चिट्ठियाँ ?"

माँ को बेटे पर दया आई। और फिर सोचा, लड़का ठीक कहता है। अब उन चिट्ठियों में क्या धरा है। कहा—"जा ले ले।"

विनोद उन चिट्ठियों का बंडल उठा लाया और इन्द्र की परियाँ काटने लगा ? दस पन्द्रह काट चुका तो उन्हें साथियों को बाँटने गया। उसने सोचा शायद इंटरिम

गवर्नमेंट के मंत्रियों के घरों में भी झगड़ा होता हो अतएव उसने बहुत से लिफाफे लिये। उन पर एक चपरासी से पूछ-पूछ कर सब मंत्रियों के पते लिखे और उन्हें लेटर बक्स में डालने गया।

इसी बीच में प्रोफेसर बसन्त कुमार ताँगा लेकर आये बाहर ही से बोले—"चलो।"

सुधा ने कोई उत्तर न दिया। वह रो रही थी।

"ऐं तुम रो रही हो। ओफ जीवन की वास्तविकता से तुम कितनी दूर हो। तुम आज भी वही कालिज की छोकरी बनी हो?"

"और तुम उपेक्षित पति का स्वांग बनाये घूम रहे हो? अपनी कहो?"

इसी समय विनोद दौड़ा हुआ आया। "यह लीजिये पिता जी।"

"क्या है बेटे?"

"इन्द्र की परी! एक एक इंटरिम गवर्नमेंट के सब मंत्रियों के नाम पर डाक बम्बे में डाल आया हूँ।"

"बहुत सुन्दर है बेटे।' प्रोफेसर साहब ने कल्पना की, लड़का कैसा होनहार है। जरूर यह मुल्क का नेता या कोई महान कलाकार बनेगा। पर इंटरिम गवर्नमेंट के मेम्बर क्या कहेंगे, इसकी बेवकूफी पर। शायद उनका भी दिल बहले।

प्रोफेसर साहब ने एक इन्द्र की परी को ध्यान से देखा। भोली आकृति, फैले पंख! अरे यह क्या? उनका ध्यान लिखावट पर गया। उन्हीं के हाथ के अक्षर थे। हाँ थे तो। ये प्रेम पत्र थे जो उन्होंने विवाह से पहले सुधा को लिखे थे उन्होंने पढ़ने की कोशिश की। कुछ टूटे फूटे वाक्य ये थे—"कुछ भी हो...प्रेम...आँधी आये दुख की बदली छाये ..मैं कदापि नहीं...तुम्हें निरन्तर सुखी बनाने की चेष्टा..."

विनोद ये कागज तुम्हें कहाँ मिले।

"अम्मा के बक्स में थे।"

"हूँ! इस घर में कागज वैसे ही छिपा कर रखना पड़ता है जैसे चींटी से चीनी बचानी पड़ती है।" प्रोफेसर ने एक इन्द्र परी सुधा की ओर बढ़ाते हुये कहा—'लो, हमारे स्नेह की आज स्मृति भी मिट गई।"

सुधा ने पढ़ा—"हम आदर्श दम्पती होंगे, अपना प्रेम, यौवन, मृदु व्यवहार अटूट रखेंगे। कोई शक्ति हमें जुदा न कर सकेगी।"

"हम कितने बेवकूफ हैं कि जो सुख हमको प्राप्त हैं उनको भी ठुकरा रहे हैं। सुधा मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकूँगा।"

सुधा की आँखों से आँसू उमड़े आ रहे थे और होठों पर मुस्कान दौड़ी आ रही थी। पति के कंधों के पीछे मुँह छिपा कर उसने कहा—"लोग इन्द्र की उन परियों को पढ़ेंगे तो जान जायेंगे कि ..।"

"कोई कुछ न जान सकेगा। और जानेगा तो यह कि हम एक दूसरे को कितना प्यार करते हैं। और सम्भव है वे इन्द्र की परियाँ उन्हें भी बीती घड़ियों की याद दिलावें और उनके जीवन में भी नया रस लावें।"

"पिता जी इन परियों को बाँट आऊँ।"

"नहीं मेरे बेटे मैं इन सब को लूँगा।"

प्रोफेसर बसन्त कुमार ने उन सब परियों को एक के ऊपर एक रख कर अपनी नोट बुक में रख लिया और बाहर आकर ताँगे वाले से बोले—"भाई माफ करो! अब कहीं नहीं जायँगे।"

उस दिन से उस घर में नया जीवन शुरू हुआ। दुनिया क्या कहती है, इसकी परवा न कर के पति पत्नी एक दूसरे को सुखी बनाते हुये सुख से रहने लगे।

वह कागज का एक टुकड़ा था। परन्तु उसकी बदौलत वह अँधेरा घर प्रेम के प्रकाश से एक बार फिर जगमगा उठा।

नारी क्या है!

प्रेषक, 'ललित' शाहजहाँपुरी

नारियों के झगड़े पुरुषों के युद्धों को जन्म देते हैं।
—फुलर

वे नारियाँ जो अपने प्रथम विवाह में प्रसन्न रहती हैं, दूसरे की फिक्र में रहती है। —एडीसन

नारियाँ उन्हीं को सबसे अधिक प्यार करती हैं, जो उनकी सबसे अधिक परीक्षा लेते हैं। —एनॉनमस

एक छोटी पर शिक्षाप्रद कहानी

अच्छी बहू

लेखिका, कुमारी प्रीतम प्रभाकर सरगोधा

(१)

सुमना बधू-वेष में ससुराल आई तो मुहल्ले भर में धूम मच गई! सासें बहुओं को सुना-सुना कर कहतीं—बहू तो आई है सरस्वती की! सौ में एक। सौंदर्य में अद्वितीय! स्वभाव है मानों मिश्री की डली। बोलती है तो मुँह से फूल झड़ते हैं!

सचमुच था भी ऐसा ही। जैसा अच्छा घर था वैसी ही नेक बहू आई। सरस्वती के मन की मत पूछो। भूमि पर पाँव नहीं पड़ते थे। मोहन को तो मानों राधा मिली। पहली ही दृष्टि में सब कुछ गवाँ बैठा। आनन्द पूर्वक दिन कटने लगे।

तीन चार महीने इधर उधर आने जाने में बीत गये। सरस्वती मन ही मन रीतियों को कोसती—ऐसा भी भला क्या हुआ! जी भर बहू के पास रहने नहीं पाती कि बुलावा आ जाता है। "अब के बहू को छः सात महीने से पहले नहीं भेजूँगी।" कहला भेजा सम्बन्धिन को उसने।

(२)

रात्रि को दस बजे थे। सुमना तथा मोहन अभी अभी सिनेमा देख कर लौटे थे। खाना खा सुमना सास के पांव दबाने लगी पर नींद का बहाना कर उसने मना कर दिया। सुमना अनिच्छा पूर्वक चारपाई पर पड़ रही। पर नींद न आई। न जाने माँ जी क्यों तीन चार दिन से अच्छी तरह बोल नहीं रहीं। पांव भी दबाने नहीं देती।

तीन मास हो गये यहाँ आए। कितना प्यार करती थी मुझसे। फिर अकस्मात यह परिवर्तन क्यों? एक एक करके सारी बातें याद आईं सुमना को। दोष मेरा ही तो है। मैं पति को लेकर इतनी मस्त हो गई कि सास को भुला दिया। कभी सिनेमा है तो कभी पार्टी और कभी किसी के यहाँ जाना हो रहा है। भला नाराज क्यों न हों? मैंने उनके पुत्र को भी छीना। हाँ, वह कब जाते हैं माँ के पास। फिर स्पर्धा क्यों न करें। ऐसी अनेक बातें याद करके सुमना पश्चाताप के आँसू बहाने लगी।

मोहन दफतर का काम समाप्त करके सोने के लिये आया तो पत्नी को आँसू बहाते देख सन्न रह गया।

'क्या हुआ सुमना?' प्रेम से पूछा मोहन ने।

'कुछ तो नहीं' आँसू पोछते हुए सुमना बोली—पर मोहन कब छोड़ने वाला था। सुमना ने सब कुछ बतलाया। मोहन की आंखें खुलीं।

'सच, सुमना! बहुत अपराध हुआ। हम प्रेमान्ध हो कर स्नेहमयी माँ को भूल गये। खैर, माँ क्षमा करेगी। आओ प्रतिज्ञा करें कि हम माँ को दुखी न होने देंगे। सुमना ने भी मन ही मन दोहराया इसको।

[३]

"माँ, तुम भी चलो ना।"

"नहीं, बेटा! मैं न जाऊँगी।"

"तो हम भी नहीं जाते" —मचल पड़ा मोहन

"अरे; मोहन! कब तक तू बचा बना रहेगा। जा मेरे लाल। घुमा फिरा ला बहू को।"

"मैं क्यों जाऊँ?" सुमना रूठ गई।

"लो दोनों नटखट एक तरफ हो गये"—उठते हुये माँ बोली-"चलो बाबा, तुम नहीं मानोगे। चलती हूँ।"

इसी तरह हँसी खुशी से दिन बीतने लगे। मोहन दफ़्तर से लौटते ही माँ के पास जाता। रात को काफी देर तक बातें होती रहतीं! माँ नींद का बहाना कर किसी तरह मोहन को सोने के लिये भेजती।

सुमना प्रसन्न थी। सास के प्रेम का ओर छोर न था।

"बेटी, घर गृहस्थी का सारा काम देख लो! पीछे तकलीफ न हो"

"कब? माँ।"

"बेटी, कुछ दिनों के लिये मैं अपने भैया के पास जाऊँगी; बहुत दिन हो गये उससे मिले।"

"नहीं, माँ! मैं नहीं जाने दूँगी! नहीं मुझे भी ले चलो" सुमना की आँखो में आंसू थे।

सरस्वती ने बहू को छाती से चिपटाते हुये कहा—"अरी, कहाँ से सीखा तूने यह वशीकरण मंत्र।"

गर्भिणी के स्वास्थ्य रक्षार्थ नियम

लेखक, डाक्टर जयनारायण सिंह

> लेखक महोदय बिहार के एक अनुभवी और प्रसिद्ध डाक्टर हैं। आपने प्रसव रहस्य नाम का एक परम उपयोगी ग्रन्थ लिखा है। यह लेख उसी ग्रन्थ का एक अंश है जो आपने हमारी प्रार्थना पर खास तौर से 'दीदी' में प्रकाशनार्थ भेजा है।

गर्भ धारण करना एक प्राकृतिक तथा स्वाभाविक क्रिया है, यदि गर्भिणी का साधारण जीवन स्वस्थ है तो घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हाँ निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये।

वस्त्र

वस्त्र के विषय में यह अच्छी तरह याद रहे कि वह स्तन या पेट के ऊपर कसा न हो। इसलिये ढीली बोडिस या अँगया व्यवहार करना चाहिये। साड़ी भी कमर में ढीली ही पहननी चाहिये। किसी किसी गर्भिणी का पेट पूर्ण मास में आगे की ओर लटक आता है। इस लिये गर्भाशय को सीधा रखने के लिये पेटी (बेल्ट) बान्धना नितान्त आवश्यक है। पैर फूलने पर सोने के समय पैर को तकिये के सहारे ऊपर ऊँचा करके रखना चाहिये। ऐसा नहीं करने से पैर और ज्यादा फूल जा सकता है।

व्यायाम

धनी-मानी, बिलासिनी, तथा शिक्षिता रमणियों को, जो अपने अधिकांश समय को उपन्यास पढने में तथा पलंग पर सोये सोये व्यतीत करती हैं, नियमित रूप से खुली हवा में, संध्या समय अवश्य टहलना चाहिये। सब से उत्तम तो यह है कि अनेक दास दासियों के रहते भी गृह-कार्य अपने हाथों ही करना चाहिये। इससे प्रसव-काल में वेदना बहुत कम होती है। यही कारण है कि कार्य्य-व्यस्त स्त्रियाँ जिस आसानी से बचा जनती हैं, विलासिनी स्त्रियाँ उन सहज प्राकृतिक सुविधाओं को नहीं प्राप्त कर सकती हैं। हाँ, कोई कठिन परिश्रम करना, भारी चीज उठाना या उठाने की कोशिश करना हितकर नहीं होता है; विशेष कर उन स्त्रियों को, जिन्हें गर्भ-पात का भय है। पैर द्वारा सिलाई की मशीन भी चलाना हानिकारक है। स्टूल या मोढ़ों पर चढ़ कर तसवीर या मशहरी आदि का टांगना तो बिलकुल मना है; क्योंकि स्टूल के उलट कर गिर जाने से भारी दुर्घटना होने की सम्भावना रहती है।

कोष्ठ-बद्धता

गर्भावस्था में कोष्ठ-बद्धता और भी हानिकारक है। इसलिये इस अवस्था में कोष्ठ साफ रखने का उपाय पथ्य द्वारा ही निरापद है। अधिक परिमाण में दूध तरकारी, या फल (जैसे पका पपीता, केला, अमरूद, आलू बुखारा, आम, बेल तथा आता) खाना लाभदायक है। नियमित रूप से रात में एक ग्लास गर्म दूध या प्रातः काल एक ग्लास गर्म जल पीने से गर्भिणी का कोष्ठ साफ रहता है। उपर्युक्त विधि द्वारा यदि इच्छित फल न मिले तो उस हालत में पहले से जो जुलाब लेने की आदत हो वही जुलाब व्यवहार करना चाहिये। रेंड़ी का तेल गर्भिणी के लिये उत्तम जुलाब है।

डाक्टर वामन दास मुखर्जी की राय है कि हिमाटो सालसा पेरीला (जो जेठी मधु, दाख, हल्दी, कुटकी और गुलञ्चा इत्यादि सारक द्रव्य देकर बनाया जाता है) यथा विधि व्यवहार करने से पित्त का निस्सरण अधिक होता है। इससे मल, मूत्र का परिष्कार होता रहता है। और भूख भी खूब लगती है। यह ६० बूँद एक चम्मच आधी छटाँक पानी में मिलाकर भोजनोपरान्त दोनों समय व्यवहार करना चाहिये। यदि उक्त मात्रा से फायदा न हो तो २ ड्राम (दो चम्मच) व्यवहार करना चाहिये। इस पर भी यदि फायदा न हो तो जेठी-मधु का अर्क या "कास्कारा" का अर्क को छोटे चम्मच से दो चम्मच रात में खाने से सुबह में दस्त साफ होता है। इन दवाओं

में से एक सप्ताह में दो तीन बार से अधिक व्यवहार नहीं की जा सकती है। इस पर भी फायदा न हो तो डाक्टर की सलाह से काम लेना चाहिये। कड़ा जुलाब कभी नहीं लेना चाहिये। इससे गर्भपात होने का डर रहता है। डा० ग्रीन आरमिटेज की भी यही राय है।

प्रति दिन सुबह में भींगा चना खाने से गर्भिणी का कोष्ठ साफ रहता है। यह गर्भिणी के लिये बहुत ही लाभदायक है। यह पथ्य तथा औषधि दोनों का काम करता है।

स्तन

स्तन की भिटनी (चूचुक) को साबुन से धोकर सुखा लेना चाहिये, नहीं तो भिटनी के छिद्र होकर नाना प्रकार के विषाक्त कीड़े प्रवेश कर थनैल आदि बीमारियाँ पैदा कर देते हैं। भिटनी में खैंड़ी पड़ जाय तो जैतून का तैल लगा कर उसे साबुन से धोकर सुखा लेना चाहिये। यदि भिटनी छोटी हो तो अन्तिम मास में तैल या क्रीम लगाकर उसे खींचते रहना चाहिये ताकि बच्चे के पीने योग्य बन जाय।

दांत

गर्भावस्था में दाँत में कसैया लगने का भय रहता है। इसलिये प्रत्येक भोजन के बाद दाँत को उत्तम रीति से धोना चाहिये। यदि कसैया लग चुका हो तो उसका उचित इलाज करना चाहिये।

स्नान

दैनिक नियम में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिये। इससे मन प्रफुल्लित और शरीर स्वस्थ रहता है। स्नान के पूर्व सम्पूर्ण शरीर में शुद्ध कडुवा तैल मालिश करना चाहिये। इससे शरीर की मांस पेशी सबल होती है, और पोखरे, तालाब, या नदी में भी स्नान करने से ठंढ लगने का भय नहीं रहता है। अधिक ठंढे या अधिक गर्म जल से स्नान करना हानिकारक है।

पथ्य-पानी

प्रति दिन निर्धारित समय में भोजन करना चाहिये। नियमित समय पर भोजन नहीं करने से पाचन-शक्ति कमजोर हो जाती है। पथ्य सादा तथा बल वर्द्धक होना चाहिये जो सहज में पच जाय; जैसे—भात-दाल, रोटी-तरकारी दूध दही इत्यादि। मांस, मछली तथा अण्डे का जितना कम व्यवहार किया जाय अच्छा है विशेष मसाले दार तथा गुरु पाक भोजन कभी नहीं करना चाहिये। गर्भावस्था में फल अधिक खाना चाहिये तथा पानी भी पर्याप्त पीना चाहिये जिससे गर्भावस्था का विष पेशाब द्वारा विशेष रूप से निकलता है।

इसके सिवा पथ्य ऐसा हो जिसमें सब विटामिन तथा चूने का अंश पाया जाय। विटामिन "ए" "बी" "सी" और "डी" का गर्भिणी के पथ्य में रहना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि इससे गर्भस्थ शिशु हृष्ट-पुष्ट रहता है।

प्रति दिन सुबह मुँह धोने के बाद, भींगा चना अदरक तथा नमक के साथ नियमित रुप से खाने पर क्षुधा की वृद्धि होती है, यकृत लीवर ठीक ठीक काम करता है और दस्त साफ होता है।

हम लोगों के देश में दूध गर्भिणी के लिये प्रधानता रखता है। इसमें चूना का अंश प्राकृतिक रूप में अधिक परिमाण में रहता है। आध सेर गाय के शुद्ध दूध में १० ग्रेन चूना रहता है। गर्भस्थ शिशु के लिये प्रतिदिन उतने ही चूने की आवश्यकता रहती है। इसलिये चूने की क्षति को पूरा करने के लिये प्रत्येक माता को प्रतिदिन गाय का एक सेर दूध अवश्य खाना चाहिये।

डा० ग्रीन आरमीटेज और दत्त साहब निम्नलिखित पथ्य इस देश की गर्भिणी के लिये सिफारिश करते हैं।

(क) ढेकी तथा हाथ का कुटा हुआ चावल, चूड़ा, धान का लावा, मूढ़ी, आँटा और सूजी।

(ख तरकारी—शाक सब प्रकार के लेकिन भूने हुये नहीं। हर प्रकार की हरी तरकारियाँ; जैसे सेम, कद्दू, ककड़ी, बैगन, परवल, कच्चा मटर, फूट. रामतरोई, बन्धा गोभी, फूल गोभी, विलायती बैगन, आलू, नरियल का पानी तथा गुद्दा दोनों, प्याज और गाजर।

(लेकिन भूना हुआ कोई भी नहीं।)

(ग) फल—सब प्रकार का ताजा या पकाया हुआ।

(घ अण्डा—बतक या मुर्गी का किसी प्रकार से पर भूना हुआ नहीं।

(ङ) मछली—कबई, माँगुर और सींही; स्वच्छ पानी

की सब मछलियाँ, सिर्फ ज्यादा तेल वाली नहीं, जैसे हिल्सा, चित्तल इत्यादि।

(च) मांस—किसी तरह का नहीं। पर यदि उत्कट इच्छा हो तो खिचें पाठे या पाठी का कभी कभी दिया जा सकता है। कबूतर का "गेल्ह" या मुर्गी का बच्चा दिया जा सकता है, और चिड़ियों का नहीं।

(छ) फैट—तेल, मक्खन और घी कम।

अधिक घी की बनी हुई चीजों जैसे—पोलाव, पूड़ी, कचौड़ी इत्यादि) से परहेज करना चाहिये।

(ज दूध ताजा, बकरी या गाय का, किसी रूप में। सादा दही. घोल, या छन्ना भी खा सकती है। भैंस के दूध से परहेज रखना उत्तम है।

(झ) मिठाई—मधु, गुड़, मुरब्बा, औंटा हुआ फल का रस, चटनी, अँचार इत्यादि खा सकती हैं। फल या मेवे से बनी हुई रोटी, समोसा, पाव रोटी, और घी या मक्खन की बनी हुई मिठाई से परहेज करना चाहिये।

(ञ तरल पदार्थ—पानी पर्य्याप्त। शरबत, हलकी चाय तथा काफी सोडावाटर, लेमनेड, और नीबू का शरबत पी सकती हैं।

उपद्रव

निम्नलिखित उपद्रव उपस्थित होने से डक्टर को शीघ्र सूचित करना चाहिये और उचित राय लेनी चाहिये।

(क) पेशाब में कमी होने से।

(ख) सतत सिर में पीड़ा रहने से।

(ग) आँख की रोशनी में गड़बड़ी होने से।

(घ मुख में सूजन होने से।

(ङ) रक्त स्राव होने से।

(च) कोष्ठ-बद्ध रहने, जी मचलाने, कय होने, या पेट में दर्द होने से।

मलेरिया

जिस स्थान में मलेरिया का उपद्रव हो वहाँ प्रत्येक गर्भिणी को क्यूनाइन-बाय हाइड्रोक्लोर ३ ग्रेन की मात्रा में दिन में दो बार आदि से ही देने की व्यवस्था करनी चाहिये। अन्तिम महीने में और भी आवश्यक है।

निद्रा

प्रतिदिन आठ बजे रात में सो जाना चाहिये और सूर्योदय के पूर्व ही उठ जाना चाहिये। दिन में कभी नहीं सोना चाहिये, इससे पाचन-शक्ति कम हो जाती है। रात में भोजन के दो घण्टे बाद सोना चाहिये। शयन-गृह में विशुद्ध वायु समुचित रूप से आया जाया करे, इसका प्रबन्ध रहे। ऐसा नहीं रहने से न मन प्रफुल्लित रहता है और न शरीर ही स्वस्थ रहता है। घर में धूप और विशुद्ध वायु आने से जो फायदा होता है वह किसी भी दवा के सेवन से न होता है और न हो सकता है। यदि खिड़की खुली रहने से ठण्ड लगे तो कपड़े से शरीर ढक लेना चाहिये।

यात्रा

गर्भिणी को रेल यात्रा या किसी सवारी से कहीं जाना उचित नहीं। यदि जाना जरूरी हो तो प्रथम चार मास पर्यन्त आ जा सकती है। डा० बी० डी० मुखर्जी की राय है कि ५-६ मास में भी आ जा सकती है। उसके बाद यात्रा करने से गर्भ नष्ट होने का भय रहता है। डा० मुखर्जी का कहना है कि निषिद्ध माह में रेल यात्रा करती हुई गर्भिणी को बच्चा जनते देखा गया है। इसलिये यदि यात्रा करना अनिवार्य हो तो प्रसव सामग्री लेकर ही यात्रा करनी चाहिये।

मानसिक भाव

गर्भिणी का मन हमेशा प्रसन्न रखने का यत्न करना चाहिये। हठात् शोक, दुःख या विषाद के कारण गर्भ नष्ट होते देखा गया है। इसलिये चिन्ता-ग्रस्त होने, या रात में नींद नहीं आने से उचित औषधि का प्रबन्ध करना चाहिये। शास्त्र में भी लिखा है कि गर्भिणी के मन के भाव का प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ता है।

सन् ४२ के वे दिन !

सतारा की स्त्रियों ने नाना पाटिल की कैसी मदद की !

लेखक, श्री उमाशङ्कर शुक्ल वर्धा

नाना पाटिल

नाना पाटिल की कहानी अगस्त सन् ४२ के आन्दोलन की कहानी का सबसे दिलचस्प अंश है। नाना पाटिल पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इस आन्दोलन में गांवों की बेपढ़ी साधारण युवतियों से भी ऐसे ऐसे साहस के काम लिये जिनकी कोई कभी कल्पना भी नहीं कर सकता। उनके सम्पर्क में आते ही ये ग्राम बालायें कालेज गर्ल्स के भी कान काटने लगीं और झांसी की रानी की याद दिलाने लगीं।

क्रांति के अग्रदूत

नाना पाटिल एक साधारण परिवार के व्यक्ति हैं। आपका जन्म तीन अगस्त १६०० सन् में हुआ था। उन्होंने शिक्षा बहुत कम पाई है। खूब मोटे ताजे पहलवान हैं। कांग्रेस में वे सन् ३० से आये। पर न वे कभी किसी कांग्रेस कमेटी के प्रेसिडेंट रहे न सेक्रेटरी— उनका एक काम था। सभाओं की सूचना डुग्गी पीटकर दे आना। सभास्थलों पर अपने सिर पर बत्ती रख कर खड़े होना। कौन जानता था कि यह साधारण नाना पाटिल कभी सतारा की क्रांति का अग्रदूत बनेगा? वहां के युवक पाटिल के इशारों पर नाचते हैं। सन् ४२ के आन्दोलन में उन्होंने रेल उलटाई, सरकारी खजाना लूटा, डाक बङ्गलों में आग लगाई, तार तोड़े, क्या नहीं किया। पर आज हम इस लेख में यह बताने जा रहे हैं कि सतारा की वीर बालाओं ने उस क्रांति में नाना पाटिल की कैसी मदद की।

गिलवर्ट नाकामयाब

उन दिनों नाना पाटिल पर ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने बहुत से जुर्म लगाये थे। पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उन्हें कोई गिरफ्तार कर ले। सिंध में हूरों को पकड़ने वाला सुप्रसिद्ध अंग्रेज कप्तान गिलवर्ट सतारा के इलाके में तैनात किया गया कि वह नाना पाटिल को गिरफ़्तार करे। पर वह नाकामयाब रहा। नाना पाटिल को पकड़ना कोई हँसी खेल न था। उस समय नाना पाटिल किसी भी घर में चले जाते तो स्त्रियाँ उन्हें बड़े प्रेम से खाना खिलातीं। नाना पाटिल ने इस सम्बन्ध में बतलाया कि एक बार वे ऐसे घर में गये कि वहाँ की स्त्री को उनके लिये पीस कर रोटियाँ बनानी पड़ी। यहाँ तक कि हाथ में छाले आ गये थे। छाले छुपाने का उस स्त्री ने बहुत प्रयत्न किया पर नाना पाटिल को यह जान

कर बहुत दुःख हुआ कि उस स्त्री को कितनी तकलीफ हुई। एक बार ऐसा मौका आ गया कि पुलिस को मालूम पड़ गया कि वे एक घर में हैं। पुलिस ने घर की स्त्री से बहुत कुछ पूछा पांछा पर वह टस से मस न हुई। उसे खूब पीटा गया पर उसने 'उफ' तक न किया। यह सब क्यों—इसलिये कि नाना पाटिल गिरफ़ार न हो जायँ।

स्त्रियों ने हथियार लाये

पहले तो सतारा के क्रांतिकारियों के पास हथियार न थे। उन लोगों को बन्दूकें वगैरह चलाना ही न आता था और एक बार जब उन्होंने सरकारी बन्दूकें हड़पी थीं तो उनके सामने यह समस्या आ गई थी कि बंदूक चलाई कैसे जायँ। पर बाद में उन लोगों ने बंदूक चलाना सीख लिया था। यों तो बंदूक के अलावा और भी कई हथियारों की जरूरत उन्हें पड़ा करती थी। हथियार लाये जाते थे गोवा से और यह काम नाना पाटिल ने सौंपा था—वहाँ की बड़ी बड़ी लड़कियों को। ऐसी लड़कियों को जो पढ़ी लिखी न थीं—बिलकुल देहाती। पर उन्हें बाद में खूब सिखाया गया और वे बड़ी आसानी से गोवा राज्य से हथियार लाती थीं। नाना पाटिल ने क्या किया था कि उन लड़कियों को बिलकुल कालेज गर्ल्स बना दिया। फैशनेबुल साड़ी, एँड़ीदार जूता, मुँह पर पावडर, हाथों में छोटी छोटी छतरियाँ, बगल में दबाने के लिये दो चार पुस्तकें बस यही थी वेश भूषा उन लोगों की। उन्हें सिखाया गया था कि वे रेल के डिब्बे में रास्ते भर अपने सामने किताब खोले रहा करें और पढ़ने का उपक्रम करती रहें। जब वे गोवा पहुँचती थीं तो नाना पाटिल के आदमी हथियार खरीद कर उन लड़कियों के बिस्तरों में बाँध देते थे और लड़कियाँ लेकर चली आती थीं। न किसी ने पूछा और न उन्होंने बतायाया ही। यह भी उन लड़कियों को बता दिया गया था कि अगर कभी धोखे से बिस्तर पकड़ा जाय तो साफ इंकार कर देना कि बिस्तरा उनका नहीं है। पर ऐसा मौका कभी नहीं आया।

वीर रमणी लीलावती

कुछ आदमी जो कि पकड़े गये थे जेल तोड़ कर भागे थे। उनमें से यरवदा जेल से लीलावती बाई भागीं। वे कैसे भागीं इसकी एक मनोरंजक गाथा है—

'पहले वे बीमार बनीं और उन्हें ससून अस्पताल पूना में इलाज लिये लाया गया। नाना पाटिल के आदमियों को यह बात मालूम हो गई। दो आदमी रोज अस्पताल के फाटक के पास जाते और वहाँ पर बैठ कर भूँजे चने खाते। आपस में इधर उधर की चर्चा करते। पुलिस कांस्टेबल जो पहरे पर रहता था उन लोगों के पास आकर बैठ जाता था। यह क्रम कई दिनों तक चला। इस बीच लीलावती क्या करती थीं कि वे फाटक तक आती और वापस चली जाती थीं। जिससे कोई यह समझे कि वे टहल रही हैं। इस तरह एक दिन उन दोनों आदमियों ने फाटक पर एक दिन एक सायकल ले जाकर रख दिया। पुलिस कांस्टेबल भी उनके पास आकर चने और लाई खाने लगा। मूंगफली भी खाने लगा। इधर उधर की गप्पें हांकी जाने लगीं। इधर लीलावती बिलकुल तैयार हो गई थीं। उनका टहलना जारी था। मौका पाकर उन दोनों आदमियों ने उस पहरेदार कांस्टेबल का गला दबाया, उसे मारा पीटा और इसी बीच लीलावती सायकल पर बैठ कर नौ दो ग्यारह हो गई। वे दोनों आदमी भी भाग खड़े हुये। जब कांस्टेबल को होश आया तब उसने जाकर घण्टा बजाया और तब कहीं पुलिस आई। देखा तो लीलावती अपने कमरे से गायब हो गई थीं। पुलिस पकड़ने के लिये दौड़ धूप मचाने लगी ताकि वे लीलावती को पकड़ने में समर्थ हो जाय परन्तु नाना पाटिल के आदमियों ने कच्चे भुट्टे थोड़े ही चबाये थे। उन्होंने लीलावती का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर दिया था। लीलावती को ढूँढ़ते ढूँढ़ते पुलिस कांस्टेबल परेशान हो गये। उनका कहीं पता न चला। पुलिस वालों की बुद्धि तो देखिये—उन्होंने क्या किया कि पूना भर की सड़कों में जहाँ कोई लड़की सायकल पर दिखाई देती चट से उसे रोक कर उसका नाम और रहने का पता पूछते और तब कहीं जाने देते। पर कौन जाने शायद लीलावती ने अपना नाम लीलावती न बता कर कोई दूसरा नाम बता दिया हो।

सतारा में आज बड़ी बड़ी समाज सेविकाएँ हैं जो दिन रात नारी जागरण का काम कर रही हैं।

[भारतेंदु हिन्दी सिंडीकेट वर्धा]

भोजन में बालक की आदत

लेखक श्री ब्रजमोहन मिहिर

केवल दूध पिलाने की अवधि के बाद जब बालक को अन्य प्रकार का भोजन देना आरम्भ किया जाय तो उस समय भी भोजन की चीजों पर काफी ध्यान देने की जरूरत है। ऐसा नहीं है कि जब जो जी चाहा दे दिया। गलत प्रकार का या अधिक भोजन देने से बालक का पेट शीघ्र खराब हो जाता है और वह कई प्रकार के रोगों से पीड़ित हो जाता है। रोग उसी समय प्रवेश करता है जब भोजन में गड़बड़ी होती है।

आमाशय कोई ऐसा यन्त्र नहीं है कि जिसमें जो चाहा सो भर दिया। प्रत्येक बात के लिये कुछ आवश्यक नियमों का पालन करना पड़ता है। वे नियम जब पालन नहीं किये जाते तो अराजकता उत्पन्न हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ भोजन सम्बन्धी बातों का पालन नहीं किया जाता वहाँ मेदा पूरे शरीर के साथ अराजकता कर बैठता है।

बच्चे को भोजन देने का अभिप्राय है उसको नई नई चीजों के स्वाद का आदी बनाना। ऐसी दशा में यह ध्यान देने की बात है कि वे वेही चीजें होनी चाहिये जो बच्चे की आयु के अनुकूल स्वास्थ्य वर्द्धक और रुचिकारक हों। बच्चे को ऐसी चीज न दी जाय जो उसके स्वास्थ्य के लिये हानिकर हो। आरम्भ में जो चीजें उसे दी जायगी उसी का वह आदी बन जायगा। बाल्यकाल मनुष्य जीवन का शिक्षा काल है। इस समय जिस बात की आदत पड़ जाती है वह चरित्र निर्माण में शिलान्यास का काम करती है। इस काल की थोड़ी भी असावधानी अधिक हानिकर प्रमाणित होगी। सुतराम बालकों के प्रति व्यवहार में सभी अच्छे उपकरणों पर ध्यान देना चाहिये।

बालक जब उत्पन्न होता है तो उसमें आदतें नहीं होतीं। जैसे वह रक्खा जाता है वैसी ही उसकी आदत पड़ती है। बालकों में अनुकरण करने की शक्ति प्रबल होती है। इसका मुख्य कारण है विकास की प्रगति। बालक में अनुकरण करने की यह शक्ति यदि न होती तो उसके विकास में अवश्य ही प्रतिरोध होता। अपनी इस शक्ति के कारण ही बालक उत्तरोत्तर उन्नति करते रहते हैं। अतः उनकी इस स्वाभाहिक प्रवृत्ति में माता पिता तथा शिक्षकों को लाभ उठाना चाहिये।

भोजन की आदत से ही बालक की प्रथम् शिक्षा आरम्भ होती हैं। अतः जब चाहा तब भोजन दे दिया, ऐसा न करके उन्हें नियत समय पर भोजन देना चाहिये। ऐसा करने से उन्हें ठीक समय पर भूख लगेगी और तब वह भोजन की इच्छा प्रकट करेंगे। भोजन में जो चीज बच्चे को दी जायगी उसी का वह आदी बन जायगा। कोई भी बालक पहले खट्टी कड़ूई या चरपड़ी चीजों को खाना पसन्द नहीं करता लेकिन उसकी इच्छा के विरुद्ध जो उसे वे ही चीजें बराबर दी जाती हैं तो वह उनका आदी हो जाता है और उसके लिये वह अपनी रुचि प्रकट करने लगता है। जिस मात्रा में उन्हें भोजन की चीजें दी जायँ उसमें भी जल्दी जल्दी परिवर्तन न किया जाय। ऐसा करने से वह जरूरत से अधिक भोजन करने का अभ्यासी बन जायगा। इससे उसका मेदा खराब हो जायगा और वह किसी रोग के चंगुल में फंस सकता है।

किस प्रकार बैठकर और कैसे भोजन करना चाहिये आदि बातें भी बालक को उसकी सभ्य समाज और प्रथा के अनुसार सिखाना चाहिये। भोजन में सफाई आदि के नियमों की बातें भी बालक को सिखाई जाय जिससे कि भोजन करते समय बालक अपने वस्त्र की ओर खाने की चीजों को गन्दी न कर दें। भोजन के समय बालक अपना वस्त्र प्रायः खराब कर देते हैं। इस सम्बन्ध में उन्हें सावधान कर देना चाहिये। भोजन के समय का वस्त्र भी हलका होना चाहिये।

एक सुन्दर सामाजिक कहानी

जय--पराजय

लेखिका, कुमारी सुविद्या अग्रवाल

[१]

हरीश थका सा आकर अपने कमरे में सोफे पर लेट गया। अनमने मन से सिग्रेट निकाल कर जला ली। सिगरेट का छल्लेदार धुँआ देखता वह विचारों में लीन हो गया—"आज शादी का पहला वर्ष समाप्त हो गया। कल से दूसरा भी आरम्भ हो जावेगा। इस बीच सिर्फ दो महीने ही शांता यहाँ रही। ओफ! कितनी असभ्य लड़की है। मैं तो ऐसी लड़कियों से बहुत घृणा करता हूँ। बोलने की तो जैसे उसने कसम खा रखी हो। और तो और घूँघट तक न उठाया। ऐसी भी क्या शर्म। न जाने शर्म से न बोलती थी या अभिमान से फूली थी। बड़े बाप की बेटी है न। बाप ही कौन बड़ा अमीर है एडवोकेट ही तो हैं। और अमीर हैं तो क्या अपनी अमीरी मुझे तो न देदेंगे। न जाने क्या उल्टी सीधी पिता से लगाकर अपना काम बना लिया। अब आजन्म रक्खें अपनी लड़की को। मैं भी अब कभी उसको लाने का नाम न लूँगा। मैं क्या करूंगा असभ्य जिद्दिन, बेढङ्गी पत्नी का। आज ही के दिन शादी हुई थी। वह ढङ्ग की होती तो इस वक्त दोनों चौक में कचौरियाँ उड़ा कर पार्क में घूम रहे होते। कहाँ यहाँ एकान्त में पड़ा गम गलत कर रहा हूँ। मैंने भी विवाह से पहले कितनी स्कीमें बना रक्खी थीं। साथ साथ घूमना, टेनिस खेलना इत्यादि। मित्रों की मंडली में सबसे सभ्य जोड़ा दिखलाई देगा हम लोगों का यही मैं हमेशा कहा करता था। सब अरमान मिट्टी में मिल गये। सारा जीवन ही नीरस हो गया। अब वह क्या सुधर सकती है।

माँ पीछे पड़ पड़ कर रह गईं–'जा बेटा बहू को बिदा करा ला। शुरू शर्मीली बहुयें ऐसी ही होती हैं। बहुओं का चटर-चटर बोलना भी किस काम का। कुछ दिनों में आप ही ठीक हो जावेगी। इतनी सी बात पर कोई बहू नहीं छोड़ देता है।' माँ कहती हैं इतनी सी बात, मेरी तो सारी जिन्दगी ही बरबाद हो गई। उस दिन दावत में सब मित्रों की बीबियाँ जमा हुई थी, ये ही एक उनमें असभ्य दिखलाई देती थी। लम्बा घूँघट, गठरी बनी बैठी रही। कमर भी न दर्द की होगी झुके झुके। मैंने कितना मना कर दिया था 'घूँघट वहाँ न निकालना' लेकिन न मानना था, न मानी, जिद्दिन तो पक्की है। सब लोगों के सामने मेरी बेइज्जती करानी थी तो कैसे मानती। उस दिन से मैंने भी उससे बोलने की जरूरत न समझी। पिता जी ने भी न जाने क्या सोच कर इसी वकील के यहाँ शादी मंजूर कर ली। हजारों जगहों से बातचीत हो रही थी। हजारों फोटो आये थे। उँह! वे भी क्या करते सोचा होगा पढ़ी लिखी सुन्दर बीबी चाहता है सो लड़की एम० ए० पास है और सुन्दर भी कम नहीं है। वे क्या जाने आजकल की सभ्यता क्या है। मैंने तो दो ही महीने में उसको अच्छी तरह परख लिया। चाहे कोई कितना भी पीछे पड़े, पर मैं कभी उसको लेने नहीं जा सकता। अगर स्वयं भी आ गई तो मेरे दिल में स्थान नहीं पा सकती।"

हरीश ने शांता को न लाने का पक्का इरादा कर, हाथ में की सिगरेट फर्श पर फेंक दी। अङ्गड़ाई लेकर उठा तो देखा करीब आधी डब्बी सिगरेट अधजली फर्श पर पड़ी हैं। अन्त में फेंकी हुई सिगरेट भी उसी ढेर में जा मिली। चौंक कर सिगरेट की डब्बी उठा कर जेब में रख ली—"ओह! मैंने कितनी सिगरेटें पी डाली" कहता हरीश अलसाया सा उठा और रेकेट उठा कर कुछ गुनगुनाता कमरे से बाहर हो गया।

[२]

आज शांता के भाई मोहन बाबू इंगलेंड से डाक्टरी की डिग्री लेकर वापस आ रहे हैं। पिताजी और छोटा भाई हरपू बंबई उन्हें रिसीव करने गये हैं। शांता और उसकी माँ घर के कामों में जुटी हैं। मोहन भैया को समोसे पसन्द हैं, मोहन भैया आते ही चाय पियेंगे, आदि मोहन बाबू की पसन्द की वस्तुओं के नाम लिये

जा रहे हैं। घर में एक धूम सी मची है। और धूम भी क्यों न हो? मोहन बाबू के आने के दो महीने बाद ही तो उनकी शादी है। नौकर चाकर सब खुशीसे फूले न समा रहे हैं। शांता भी खुश है–"भाभी आयेंगी। ग्रेजुऐट हैं। फैशनेबिल भी बहुत हैं। जाने मुझसे बोलेंगी भी, या नहीं। जिस शहर में मेरी ससुराल है वहीं तो वह भी हैं। शायद, वे आठ, दस, फैशनेबिल लड़कियाँ दावत में आईं थीं उन्हीं में से कोई हो। मैं तो घूँघट आदि के कारण कुछ देख भी न सकी। उन्होंने कितना मना कर दिया था घूँघट न निकालना परन्तु मैं मानी ही नही। शायद इसी से नाराज हो गये हैं। मैं क्या करूँ लज्जा के कारण विवश थी। मैं भी कितनी मूर्ख थी जो उनकी आज्ञा न मानी। अब पछताती हूँ। कितने पत्र लिख कर क्षमा माँगी। लेकिन वे तो जैसे पत्र बिना पढ़े ही फाड़ कर फेंक देते हों। जरा भी दिल नहीं पसीजा उनका। सब ने समझाया, बुझाया लेकिन एक भी न सुनी। हे परमात्मा! न जाने कब मेरे जीवन में सुख का सूर्य उदय होगा।" यही सब सोचते सोचते वह एकाएक बेचैन हो उठती। दबी सी 'आह' उसके मुँह से निकल पड़ती। अपना दुःख भाई के आने की खुशी में भरसक छिपाने का प्रयत्न करती, वह खुश है।

[३]

मोहन बाबू की पत्नी सरोज रानी ग्रेजुऐट होने पर भी सरल स्वभाव की है। अभिमान की बू तक उसे न छू पाई है। भोली शांता की लजीली आदतें उसे बहुत सुन्दर लगीं। शांता के कुछ न कहने पर भी उसने शांता का दुःख अनुभव किया। और उसे हर तरह से प्रसन्न रखने की चेष्टा करने लगी। शांता भी स्नेहमयी भाभी का साथ पाकर अपना दुःख भूलने लगी।

सरोज रानी हरीश से भली भाँति परिचित है। कालेज में अक्सर वे लोग मिलते रहते, टेनिस आदि खेलों में दोनों का खूब साथ रहता। फिर भी, उनमें बहुत ज्यादा घनिष्टता नहीं थी।

सरोज रानी हरीश का हठीला और अहंकारी स्वभाव जानती है, तभी शांता के प्रति उसका हृदय और भी सहानुभूति से भरता जा रहा है। मोहन बाबू से भी उसने इस विषय में जिक्र किया। मोहन बाबू ने कहा—हरीश को हम सब लोगों ने समझा बुझा कर देख लिया।' वह कहता है—'मैं दूसरी शादी जरूर करूँगा।'

'तब तो बहुत बुरी बात है। मैं उसकी आदतें भली प्रकार जानती हूँ, जो न कर डाले वही थोड़ा। अब तो शायद नौकर भी हो गया है ५००) मासिक पर। बेचारी शांता बीबी के भाग्य में जाने क्या लिखा है।'

'मैंने एक बात सोची है, सरोज। अगर तुम चाहो तो सीधे मार्ग पर उसको ला सकती हो।'

'ऐं। मैं? मैं कैसे ला सकती हूँ? समझा सकती हूँ सो मेरे समझाने से और चिढ़ जावेगा।'

'नहीं। समझाने से काम नहीं चलेगा। और कुछ उपाय निकालो। हमको अपनी शांता के जीवन की ओर भी तो देखना है, और तुम्हारा तो वह सहपाठी भी रह चुका है।'

सरोज रानी चुपचाप कुछ सोचती रही।

'अगर आप आज्ञा दें तो कोशिश करूँ।'

'वाह। आखिर तुमने कोई तरकीब निकाल ही डाली।' हँस कर मोहन बाबू ने सरोज रानी की पीठ ठोंकी।

'परन्तु, उसमें आपकी आज्ञा की भी तो आवश्यकता है।' सरोज रानी मुस्कराई।

'अच्छा? अब तक मेरी आज्ञा के ही कारण तुम झिझक रही थीं। तुम अपना उपाय करो मेरी ओर से आज्ञा है।'

[४]

कुछ दिन बाद सरोज रानी अपने पिता के यहाँ चली आई। यहाँ आकर उसने हरीश का पता लगाया, और धीरे धीरे उससे घनिष्टता बढ़ने लगी। अब हरीश पूर्ण सुखी था फिर भी कभी कभी सोचता–'काश, सरोज रानी उसकी पत्नी होती।' शांता तो कभी उसके स्मरण में भी न आती थी।

सरोज रानी भी हरीश को हर समय यही दर्शाया करती कि वह उसकी ओर आकर्षित हो रही है, परन्तु अन्दर से वह अपने को उससे बहुत दूर रखती। नारी हृदय को कभी झुकने का अवसर ही नहीं देती। यही

तो उसका कठिक परीक्षा का समय है। स्वामी पर अपना विश्वास जमाने का मौका ईश्वर ने उसे दिया है। हर समय हरीश के साथ रहना, तरह तरह के अभिनय करना तिस पर उसका तनिक भी ध्यान अपने हृदय में न आने देना। सरोज रानी ने दिल कड़ा कर भोली शांता के लिये और अपने स्वामी की आज्ञा मान कर, यह सब करना स्वीकार किया है।

[५]

'हरीश बाबू। मुझे अत्यन्त दुखित होकर कहना पड़ रहा है, कि कुछ दिनों के लिये हम लोगों को अलग होना पड़ेगा।'

हरीश चौंका।

'क्यों? आखिर बात क्या हुई? क्या मुझसे कोई अपराध हो गया, जो नाराज होकर जा रही हो?'

'नहीं। यह बात नहीं, हरीश बाबू, वे मुझे बुलाने के लिये आये हैं। मैंने लाख कहा—'कुछ दिन बाद आऊँगी' लेकिन मानते ही नहीं। मैंने सोचा है, अभी चली जाऊँ, फिर कुछ दिन बाद शीघ्र आने का प्रयत्न करूँगी। यहाँ जो तुम लोगों के साथ मनोरञ्जन रहता है सो वहाँ नहीं मिल सकता।'

हरीश एक निःश्वास छोड़ उदास हो गया।

'जाने दीजिये हरीश बाबू उस बात को। आज ही का दिन तो शेष रहा है, व्यर्थ क्यों गँवायें। चलिये ज्वेलर की दूकान पर चलें, मुझे एक साड़ी पिन खरीदनी है।'

कुछ ही देर में दोनों की साइकिलें ज्वेलर की दूकान के सामने जा रुकीं। तरह तरह के सारी पिन दूकानदार ने सामने लाकर रख दिये। एक पिन हरीश की पसन्द का खरीद लिया गया। अब हरीश का चाँश था। उसने अँगूठियाँ दिखलाने को कहा और अँगूठियों के ढेर में से सरोज रानी से अपनी पसन्द की अँगूठी चुन लेने को कहा। सरोज रानी ने बिना कुछ आना काना किये एक सुन्दर सी अँगूठी जिस पर नन्हा सा 'एस' अक्षर खुद रहा था, उठा कर हरीश को पकड़ा दी। हरीश ने अँगूठी पर 'एस' देखा तो खुशी से झूम उठा। सोचा 'सरोज रानी उसकी भेंट स्वीकार करना चाहती है, तभी तो उसने 'एस' अक्षर वाली अँगूठी पसन्द की। उसे पहले शक था कि शायद ही सरोज उसकी भेंट स्वीकार करे क्योंकि अभी तक हरीश को ऐसा मौका नहीं मिल पाया था कि वह उसे कुछ उपहार देता। कभी कभी एकाएक सरोज रानी गम्भीर होकर कुछ सोचने लगती थी तो हरीश सहम सा जाता था। सरोज रानी की यह गम्भीरता ही हरीश को आगे बढ़ने से रोक देती थी। कई बार हरीश ने सरोज रानी से एकाएक गम्भीर हो जाने का कारण पूछना चाहा, परन्तु हिम्मत न पड़ी। तभी तो वह कहता है 'काश, सरोज उसकी पत्नी हो सकती।'

[६]

'आइये, हरीश बाबू। अन्दर चलिये। बैठेंगे कुछ देर। वे तो इस समय कहीं घूमने फिरने गये होंगे। दोनों ड्राइङ्ग रूम में जाकर एक ही सोफे पर बैठ गये। कुछ देर इधर उधर की बातें चलने के बाद हरीश झेंपता सा बोला।

'सरोज। आज मैं तुम्हें एक तुच्छ वस्तु भेंट स्वरूप देना चाहता हूँ। आशा है तुम मेरी प्रार्थना अस्वीकार न करोगी।'

सरोज रानी एकाएक कुछ बोल न सकी। हरीश ने उसके मौन को स्वीकार का लक्षण जान जेब से अँगूठी निकाल ली, और आगे बढ़ कर सरोज का कोमल सा हाथ अपने हाथ में ले लिया। सरोज रानी बिजली सी छिटक कर दूर जा खड़ी हुई। उसकी आँखों से आग बरस रही थी। अत्यन्त रोष भरे स्वर से वह बोली।

'वाह। हरीश बाबू वाह! देख ली आपकी सभ्यता। सभ्यता के नशे में गुण्डे बने फिरते हैं। अपनी बीबी तो छोड़ बैठे और दूसरों की स्त्रियों से ये हरकतें? मैं नहीं जानती थी, एक सभ्य और सदाचारी मनुष्य में ऐसे गुण भरे हो सकते हैं। आपके पत्नी नहीं है, जो मुझे अँगूठी भेंट करने आये हैं? बोलिये, चुप क्यों हैं!'

हरीश हक्का बक्का सा सरोज रानी का मुँह ताकता खड़ा रहा। कुछ क्षण बाद जब होश आया तो घर जाने के लिये धीरे से दरवाजे की ओर बढ़ा। उसी समय बाहर से मोहन बाबू का स्वर सुन पड़ा।

'क्या बात है सरोज। कौन है?'

'यहाँ आकर देखिये तो, ये साहब मुझे अँगूठी भेंट करने आये हैं।'

हरीश सिटपिटा कर भागना ही चाहता था कि मोहन बाबू ने साश्चर्य कहा।

'अरे। हरीश बाबू आप हैं? बड़े भाग्य से दर्शन हुये। आइये। नाश्ता वगैरह करके जाइयेगा। दामाद को कोई भूखे पेट घर से नहीं जाने देता।'

हरीश का हाथ पकड़ खींचते हुये मोहन बाबू उसे कमरे में ले आये। सरोज रानी अन्दर जा चुकी थी, इससे हरीश को कुछ धीरज हुआ। अब वह समझ गया कि सरोज रानी उसके साले मोहन बाबू की पत्नी है। अब तक उसे यह मालूम न था। मोहन बाबू की शादी में भी वह शरीक नहीं हुआ था। और न सरोज रानी ने ही इस विषय में उससे कुछ कहा। अब हरीश मोहन बाबू के सामने लज्जित हो रहा था। वह उन्हीं की बहिन को छोड़ कर पत्नी को हथियाने की कोशिश कर रह था। रह रह कर उसको सरोज रानी पर क्रोध आ रहा था। क्यों उसने पहले यह सब भेद न खोला। आज पहली बार उसे शांता का भोलापन याद आया। वह भी तो मोहन बाबू के सामने लज्जा से आँखें नहीं उठा पा रहा है। इसी प्रकार शांता भी लज्जा के वश में हो उसकी आज्ञा न मानने को विवश हो गई होगी।

मोहन बाबू ने हरीश को घर न जाने दिया। रात भर दोनों में जाने क्या क्या बातें होती रहीं।

[७]

'अरे! तुम तो दामाद की खातिर करना खूब जानती हो। हम लोगों को उठने में देर हो गई, फिर भी गरमा गरम नाश्ता मिला।'

'जी हाँ। मैं तो खातिर करना खूब जानती हूँ, और दामाद भी तो सलहज को अँगूठी भेंट करना नहीं भूलते। मैंने तो शांता के लिये अँगूठी चुनी थी 'एस' अक्षर की। सो, ये हजरत मुझको ही भेंट करने चले थे।'

'वह बात कब तक याद रक्खोगी? वह तो एक मजाक मात्र था। तुम लोगों का मजाक का रिश्ता भी तो है।'

'मैं तो उस बात को जब मजाक जानूँगी जब वह अँगूठी शांता रानी की उँगली में देखूँगी।'

अब हरीश से न रहा गया, उठ कर, सरोज रानी के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

'भाभी जी। क्षमा कर दीजिये, मैं बहुत लज्जित हूँ।'

'मैंने तो क्षमा कर दिया लाला जी। लेकिन शांता से क्षमा माँगना अभी शेष है।'

सरोज रानी गद्‌गद्‌ हो उठी। हरीश नत् मस्तक हो गया।

[८]

जब से शांता के पास से सरोज रानी चली गई तब से वह फिर उदास रहने लगी है। अब उसने भगवान के चरणों में ही समय बिताने का निश्चय कर लिया है। सुबह से ही वह भगवान के कामों में व्यस्त हो जाती है। एक एकांत कोठरी में उसने भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति सजा ली है। बाग में से फूल चुन कर लाती, माला गूँथती, आरती सजाती, ठाकुर जी को नहला धुला कर उनकी पूजा करती और फिर घण्टों भगवान के चरणों पर पड़ी रोया करती या अपना दुःख भगवान को सुनाया करती। अब उसकी यही दिन चर्या है। माता से पुत्री की यह दशा न देखी जाती। उन्हीं के बहुत पीछे पड़ने पर मोहन बाबू सरोज रानी को बिदा कराने गये हैं।

[९]

आज शांता भाभी की प्रतीक्षा में बैठी है। जब भाभी आवेंगी तब वह उनसे कहेगी कि अब उसने ऐसा साथी खोज लिया है, जो उसे छोड़ कर कभी नहीं जावेगा। एकाएक मोटर का हार्न सुनाई पड़ा और कुछ क्षणों बाद ही शांता सरोज रानी के गले में बाँहें डाले कह रही थी।

'क्यों भाभी? इतने दिन तक मुझे छोड़ कर कहाँ भाग गई थी?'

सरोज रानी ने प्यार से उसके गाल थपथपाये। 'रानी, तेरा ही कुछ काम बना रही थी।'

शांता कुछ बोलना ही चाहती थी, कि हरषू कूदता फाँदता, चिल्लाता आ पहुँचा।

'अम्माँ ! ओ अम्माँ ! भैया के साथ जीजा जी भी आये हैं।'

शांता ने सुना 'जीजा जी भी आये हैं' तो शर्म से सिर झुका भाभी के पास से भाग कर ठाकुर जी की कोठरी में घुस गई। भगवान की ओर दृष्टि गई तो दिल 'धक्' से हो गया। अरे आज उसने अपने ठाकुर जी का कुछ काम न किया। एक पुष्प तक उन पर नहीं चढ़ा था। दौड़ कर बाग में गई और जाने क्या क्या सोचती ढेर से पुष्प चुन लाई। एक हार बना लिया। फूल बच रहे। दूसरा भी बना लिया। इधर उधर के बिखरे पुष्प टोकरी में रख रही थी 'बस दो मालायें काफी हैं एक ठाकुर के लिये, और एक'.........

एकाएक पैरों की आहट सुन पड़ी। सिर उठा कर देखा तो 'अरे ! वे ही हैं शायद'

हरीश पास आकर धीमें स्वर से बोला–'किसके लिये हार बना रही हो ? रानी।'

शांता कुछ न बोल सकी। सिर झुका लिया। आज हरीश को लज्जा से समिटती शांता बड़ी भली जान पड़ी। उसने जेब से अँगूठी निकाल कर शांता की कोमल सी, नन्हीं सी उँगली में पहना दी। अब शांता की बारी थी, उसने भी दोनों हाथों में हार उठा लिया परन्तु लज्जा और संकोच के कारण शीघ्र पहना न सकी। हरीश समझ गया। उसने शांता की छोटी छोटी मुट्ठियाँ दोनों हाथों से पकड़, सिर झुका गले में हार डलवा लिया। शांता के गाल शर्म से लाल हो गये। बड़ी बड़ी आँखों में आँसू छलक आये। हरीश इस सौन्दर्यमयी भोली युवती को मुग्ध दृष्टि से एक टक देखता ही रह गया।

× × ×

'शांता रानी। बधाई है तुम्हें, तुम्हारी विजय पर' हरीश सरोज रानी की हँसी भरी बधाई सुन कर चौंक पड़ा तभी मोहन बाबू ने भी उसे बधाई दी।

जाने कब से वे लोग उनका मिलन देख रहे थे। हरीश हँस पड़ा। शांता का हृदय भाई, भाभी के प्रति कृतज्ञता से भर उठा।

सुझाव—लेखक, आचार्य्य किशोर लाल घ० मशरुवाला, प्रकाशक, लोकोदय प्रकाशन वर्धा मूल्य ।=) स्वतंत्र हिन्दुस्तान का विधान बनाने में जो लोग लगे हैं, उनके लिये इस पुस्तक में कुछ सुझाव उपस्थित किए गए हैं जो विचारणीय हैं।

ध्रुव चरित—लेखक श्री सूर्य्य देव मिश्र प्रकाशक दीक्षित पब्लिसिंग हाउस बनारस। मूल्य ३) यह छोटे छोटे बारह सर्गों में विभक्त काव्य ग्रन्थ है।

मार्कण्डेय ब्रह्मपुराणांक (श्री सेठ हनुमान प्रसाद पोद्दार द्वारा संपादित प्रसिद्ध कल्याण से २१ वें वर्ष का प्रथम अंक, मूल्य ६=)

'निमंत्रण' और 'प्रसाद'—काजी अशरफ महमूद (एग्री कलचरल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, नागपूर) लिखित दो फुट कर काव्य-संग्रह। रसखान के बाद ये दूसरे मुसलमान कवि हैं जिन्होंने हिन्दी में ऐसी सरल रचना की है।

मुसलमान भाइयों से—लेखक स्वामी सत्यभक्त प्रकाशक सत्याश्रम वर्धा मूल्य =) मेल मिलाप सम्बन्धी पुस्तक।

अशान्त विश्व को शान्त का संदेश—प्रकाशक श्री जैन श्वेताम्बर तेरा पन्थी सभा २०१ हरिसन रोड कलकत्ता मूल्य ।)

दो काली काली आँखें—(कहानी संग्रह) लेखक, मोहन एल० गुप्त एम० ए० प्रकाशक, उपन्यास बहार आफिस बनारस मूल्य १)

नोआखाली में—(कविता संग्रह) लेखक, श्री सियारामशरण गुप्त प्रकाशक, साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी मूल्य ॥)

सर्दी जुकाम खाँसी—(स्वास्थ्य-विषयक) मूल लेखक, श्री रैसम्स अलास्कर। अनुवादक, श्री विट्ठलदास मोदी। प्रकाशक, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली मू० ॥)

भारत का विधान—लेखक, श्री बालकृष्ण मोहता, प्रकाशक विश्वानन्द लोक संघ १२६ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य ।=)

'पति की मुसीबत'

लेखिका, श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०

इस सम्बन्ध में जितने उत्तर आये हैं, यह उन सबसे अच्छा समझा गया अतएव यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। शेष उत्तर शिकायत करने वाले पति महोदय और उनकी श्रीमती जी के अवलोकनार्थ भेज दिये गये हैं। यदि 'दीदी' में स्थान की कमी न होती तो हम निम्नलिखित के भी उत्तर प्रकाशित करते:—

कुमारी सरला गर्ग, बुलन्दशहर। कमला माथुर, बरेली। जनक दुलारी मिश्रा विदुषी कानपुर, मनोरमा देवी मिन्त्री, कालिमपोंग। कुमारी चन्द्रप्रभा अस्थाना, देहली। गयाप्रसाद जायसवाल, उन्नाव। श्रीमती सुशीला देवी बरवाँ। विमला दत्त।

इन उत्तर प्रेषकों की हम खास तौर से प्रशसा करते हैं। सं० 'दीदी'

फरवरी मास की 'दीदी' में 'पति की मुसीबत' वाले सीर्षक का उत्तर उन्हीं की पत्नी ने लिखा है। उनको मैं उत्तर लिख रही हूँ—

प्रिय बहिन!

आपसे मैं सहमत हूँ कि बहुत से पति बात-बात पर नुकताचीनी किया करते हैं। यह भी ठीक है कि सूरज निकलने से पहिले कोई नौकर काम करने नहीं आएगा और न हमें ही बिला वजह उनको इतनी जल्दी उठाना चाहिये। क्योंकि बेचारों को दिन भर शारीरिक परिश्रम करना होता है।

पर यहाँ मैं आपकी भूल देखती हूँ। जब पति बेचारे सैर करके आकर आराम से अपने दफ़्र में बैठे सोचा करते हैं या लिखा करते हैं तो आप नौकर से कहें कि भई झाड़ू लगा आओ। झाड़ू तो कभी भी किसी के बैठे नहीं लगवाया जाना चाहिये। एक तो झाड़ू की आवाज भी बातों में या विचारों में दखल देती है दूसरे नौकर का वहाँ उस समय होना भी अप्रिय लगता है। यदि आप यह कहें कि पतिदेव परली कोठरी में जाइये या बाहर टहलिये नौकर झाड़ू लगाने आयेगा तो भी ठीक नहीं क्योंकि सैर से थक कर वह आते हैं, फिर और टहलना अच्छा ही न लगता होगा। आराम से वहाँ बैठना चाहते होंगे जहाँ उनके शरीर तथा मन दोनों को आराम मिले। यदि आप उनकी जगह हों तो ऐसी हरकत आपको भी पसंद न आयेगी। मेरे विचार में तो उस समय तक आप उनका प्रातःकाल का नाश्ता तय्यार रक्खा करें और उनके आते ही प्रेम पूर्वक थोड़ा समय उनके पास बैठ हँसमुखी हो बातें करें तो वह ज्यादा प्रसन्न होंगे बनिस्बत कि नौकर झाड़ू लेकर पहुँचे। आपको चाहिये कि जिस समय रात को पतिदेव कमरा छोड़ कर जायँ, वह दफ़्र हो या ड्राइङ्गरूम उसी समय चीजें तरकीब से रखा दें ताकि प्रातःकाल कमरा देखने में भद्दा न लगे और यदि कूड़ा इतना ज्यादा है जितना कि आप कहती हैं तो एक बार नौकर से उसी समय साफ करवा लीजिये। मुझे भी मन को शान्ति नहीं मिलती जब तक प्रातः कमरा तरकीब से न मिले सो मैं रात्रि को चीजें तरकीब से रख देती हूँ। यदि कूड़ा ज्यादा होता है तो रात्रि को ही साफ करवा देती हूँ। फिर प्रातःकाल हँसी खुशी से नाश्ता समाप्त करके जब पतिदेव दफ़्तर चले जाते हैं तो साढ़े नौ बजे पहिला काम घर को तरकीब से ठीक करना और खूब अच्छी तरह पोछवाना, साफ करवाना होता है और फिर शाम को उनके ऑफिस से आने से पहिले एक नजर सारा घर देख लेती हूँ कि ठीक है या नहीं। यदि मुझे कोई त्रुटि दिखाई देती है तो उसे पहिले से ही ठीक कर देती हूँ ताकि उनको घर पहुँचते ही शान्ति मालूम हो। घर का तरकीब से होना और साफ सुन्दर लगना थकेहारे आदमी

को मानसिक प्रसन्नता देता हुआ थकान हरने का काम देता है। फिर यदि कोई उनके साथ दोस्त आ जायें तो बेतरतीबी से एक तो उन्हें क्रोध आयेगा दूसरे मुझे गृहणी होते हुये शरम आयेगी। सो अच्छी सफाई पति के बाहर जाने पर ही हो सकती है। हाँ इस बात से मैं आप से सहमत हूँ कि हमारे गरीब देश में विलायत के वैकुअम क्लीनर का क्या काम ? खाने को तो मिलता नहीं झाडू लगाने के लिये मशीन ढूँढ़ने जायें। यह आपके पति जी की भूल है। अभी हिन्दुस्तान में यह काम हर घर में नहीं चल सकता और न ही अभी चलाने का प्रयत्न करना चाहिये। जब अपना राज्य होगा, यह सब चीजें सस्ती होंगी, खाने पीने पहिनने की जरूरतें पूरी हो सकेंगी तो इसके स्थान का भी सोचेंगे।

जड़ाऊ कंगन बेशक उतने रुपये में आ सकता है—मैं तो स्वयं भूषणों को अधिक पसन्द नहीं करती पर यदि आपके पति जिनके लिये आपको पहिनना है, जिनके लिये रूप-लावण्य फैशन है, वह नहीं पसन्द करते तो आप उसका खयाल ही न करें। यदि वह मान जाएँ तो जरूर बनवाइये, मैं तो फैशन की गुलामी पसन्द नहीं करती। हमें स्वतन्त्र प्रकृति का होना चाहिये।

रही तरकारी की बात ? मैं आप से सहमत हूँ। यदि घर में सब्जी न होगी तो प्रातःकाल उठते ही कैसे बनेगी ? हमारे पास सब्जी इतनी होनी चाहिये कि हम साँझ को मँगवाएँ ताकि साँझ के लिये और फिर प्रातःकाल के लिये अवश्य हो जाये। क्योंकि जैसा कि आप कहती हैं पति देरी बरदाश्त नहीं करते (शायद कोई पति भी नहीं करते) दूसरे कोई मेहमान आ जाये तो जवाब थोड़े ही दे देना है। अतिथि सेवा तो होनी ही चाहिये। ठीक है वह गृहस्थी ही क्या जिसके भँडार में दो चार मेहमानों के लिये भोजन का सामान न मिल जाये। समय कोई भी हो। पर किसी समय सब्जी न भी हो तब भी आप मेहमानों के आगे सुघड़ गृहणी होने से कई पदार्थ बनाकर धर सकती हैं। दो तीन दिन की इकट्ठी सब्जी रखने से तो स्वाद में भी फरक आ जाता है और उसकी शक्ति भी नष्ट होने लगती है।

बासी चीजों के हक में तो मैं भी नहीं हूँ। ताजी चीज ही अच्छी होती है। हम जिसे आजकल विटामिन कहते हैं, हमारी बूढ़ी दादियाँ 'तत्व' कहती थीं। हमारी बूढ़ी दादियाँ भी बासी चीजें इस्तेमाल करना पसन्द नहीं करती थीं। क्या आप ताजा दूध और बासी दूध एक समान समझेंगी ? चावलों में से माँड़ निकालने से तो उसके प्राण ही हर लिये जाते हैं। मैं अपने घर में हमेशा बिना माँड निकाले ही खाती हूँ। यहाँ (कलकत्ते में) आजकल माँड़ निकाला चावल खाना पड़ा क्योंकि बंगाली नौकर है। वह भात बिना माँड़ निकाले खाना पसन्द नहीं करता। सच जानिये भात जरा मीठा नहीं लगता।

सब्जियों के छिलके आप ऊपर से थोड़ा थोड़ा खुरच दिया करें, बाकी वैसे ही रहने दें। मैं तो स्वयं छिलके की शक्ति सब्जी पकाने में सुरक्षित रखना चाहती हूँ पर मेरे पति नहीं चाहते। तो भी मैं इस तरीके से बना देती हूँ, बिना छिलका अच्छी तरह उतारे (जब मैं आप स्वयं खाना बनाऊँ क्योंकि नौकर ठीक नहीं बना पाते) कि उनको पता भी नहीं चलता।

मिरच, मसाला, चटनी आदि थोड़ी खानी तो हानिकर नहीं पर अधिक तो हानिकारक है ही। मेरा स्वयं पर भी अनुभव है और दूसरों पर भी मैं देहली में रहती हूँ। इरद गिरद पड़ोसियों को रोज ही देखती हूँ, घर में शायद ही उन सब के कोई पूर्ण स्वस्थ हो। किसी को पुरानी खांसी, किसी को मलेरिया बुखार, किसी को एकजिमा, किसी के बच्चे को सोरठा रोग आदि। वहाँ पर बारी बारी इतनी बीमारियाँ आई पर मेरे पति, मैं और बच्चा सब पर ईश्वर की दया रही। कारण यही था कि भोजन के विटामिन का मैं बहुत खयाल रखती हूँ। ताजी चीज हो, बासी न हो। घर की हो, बाजार की न हो। कच्ची सब्जियाँ ताजी अधिक खाई जायँ फल खाये जाएँ जो मौसम के हों आदि आदि और ऐसे विचार मेरे शादी से पहिले कालिज में दाखिल होने से पहिले ही हो गये थे। सो मैंने अपने पर भी आजमाये भाई बहिनों पर भी। अन्य लोगों पर भी। सबके लिये लाभकारी साबित हुये। नहीं तो अक्सर आजकल लोग चाट वाट ज्यादा ही खाते हैं और बीमार भी रहते हैं। यही कारण कि गाँव के लोग शहर वालों से ज्यादा तन्दुरुस्त हैं। शहर वाले "विटामिन" आदि पढ़

लेते हैं पर उसके अनुसार करते कुछ नहीं। खाली व्याख्यानों पर हीं निर्धारित हैं। गाँव वाले रोज रोज खेत की ताजी सब्जी खाते हैं बाजार की बासी चाट मिठाइयाँ आदि उनको मिलती ही कहाँ हैं—

मुझे ऐसा करते करीबन बारह साल हो गये। मुझे एक बार भी बुखार भी नहीं चढ़ा।

मैं आजकल ही की छोकरी हूँ। सौ डेढ़ सौ कपड़े धोकर इस्त्री करके एक दम रख सकती हूँ। सारे घर का, बच्चों का काम अकेली सम्हाल सकती हूँ। कोई भी काम आप मुझसे करवा सकती हैं। मैं अपने बच्चों को भी वैसे ही रखती हूँ और जो कुछ तकलीफ आने को होती है पहिले से ही सम्हल जाना मेरा प्रयत्न होता है। चटनी अचार आदि की ज्यादतियों से दूर रहती हूँ और रखती हूँ—सो मेरे खयाल में मैंने आप की सब बातों के उत्तर दे दिये हैं। यदि कोई रह गया हो तो आप फिर लिख सकती हैं। आप बुरा न मानिये, यह सब मेरे अपने जीवन के रोज के अनुभव हैं। यदि आप 'दीदी' द्वारा पत्र व्यवहार करना नही पसन्द करतीं तो आप मुझे सीधा लिख सकती हैं मैं आपको अपनी बहिन के नाते और देश की सब नारियों की तरफ अपने कर्त्तव्य के नाते प्रेमपूर्वक उत्तर दूँगी और किसी से भी कुछ नहीं कहूँगी—आपके पति में और आप में दसगुणा अधिक प्रेम हो जायगा। मैं अपने जीवन की प्राइवेट बातें जिनसे आपकी सेवा हो सके-बताने से भी नहीं हटूँगी।

चन्द्रकान्ता जेरथ, १६, रकाबगञ्ज रोड, नई देहली।

तुलसी दास जी की नारी

यह कहना बिल्कुल गलत होगा कि वैरागी होने के कारण उनके हृदय में स्त्रियों के प्रति तनिक भी सद्भावना न थी। 'मानव' में स्त्री का जैसा सृजन तुलसी ने किया है वैसा संसार का कोई भी कवि आज तक नहीं कर सका। सीता तो अद्वितीय हैं। फिर तुलसी ने बताया है कि मन्दोदरी का उपदेश न मानने के कारण रावण का पतन हुआ। तारा की बात न सुनने के कारण बालि का नाश हुआ। जब बालि का अन्त निकट था, ठीक उसी स्थान पर तुलसी ने राम के मुख से कहलवाया है 'नारि सिखावन करसि न काना।' इन बातों को ध्यान में रख कर यही कहना पड़ता है कि तुलसी अवश्य नारी की सत्ता को स्वीकार करते थे। ऋषि-वधू का मधुर, मृदु और सरल वाणी में सीता को उपदेश देना सब स्त्रियों के लिये आदर्श है।

रामायण में जितने भी निन्दात्मक वाक्य हैं वह सिद्धान्त वाक्य नहीं है। वे प्रायः नीच पात्रों से कहलवाये गये हैं, इसी कारण प्रसंगवश बुरे नहीं प्रतीत होते। लोग सिद्धान्त और अर्थवाद में भेद नहीं समझते, और तुलसी पर स्त्री-निन्दा का आरोप लगाते हैं।

— कुमारी सरला सखूजा 'प्रभाकर'

पति की मुसीबत

३-४ माह से पति पत्नी की मुसीबतों की चर्चा 'दीदी' में पढ़ रही हूँ। आलोचनायें भी पढ़ीं। लेकिन आश्चर्य तो इस बात का है कि पूर्ण शिक्षित होते हुये भी महाशयजी व उनकी श्रीमतीजी आपस के घरेलू झगड़े मिटाने के लिये भी मासिक पत्रिकाओं में ऐलान करते हैं। मेरा तो खयाल है कि यह उनकी दीदी के पाठक-पाठिकाओं के मनोरंजन के लिये बनाई हुई कोई स्कीम है। इसके सिवा और कुछ नहीं। वास्तव में दिमाग तारीफ के काबिल है।

—सुधारानी जबलपुर

जूयें की दवा

पके हुये शरीफे का बीज १६, २० दाना लेकर छील डालो और उसे सिल बट्टे से पानी डाल कर महीन पीस डालो और उसकी लुगदी बना लो। अब इस लुगदी को तिल या सरसों के तेल में फेंट कर सिर के बालों में लेप कर दो और बाल को वैसे ही बाँध दो! फिर दो य तीन दिन बाद बाल खोल कर कंघी कर लो और तेल लगा कर गूंथ लो। इस उपाय से एक भी जूयें का पता न लगेगा। —राधा प्यारी देवी, टाण्डा

एक दुःखान्त कहानी

भूख और ममता

लेखक, श्री त्रिमित्र

[१]

मिलिट्री के यातायात के लिये बनने वाली नई सड़क पर कुछ स्त्रियाँ पत्थर तोड़ रही हैं। उनमें एक बच्चा भी है। करीब दस वर्ष का जो अपने नन्हें नन्हें हाथों द्वारा सख्त पत्थरों को तोड़ रहा है। नंगे बदन, नाम-मात्र को एक चिथड़ा लपेटे है वह। सूरज की तेज धूप से शरीर रंध्रों द्वारा निकलने वाले पानी ने उसके उस चिथड़े को तर कर दिया है। मुंह पर मैल जमी रहने से जब पसीने की कोई धार उसके छोटे से ललाट से फिसल कर आँख में आ गिरती है तो जलन को मिटाने के लिये वह एक हाथ से हथौड़ा चलाने की कोशिश करता हुआ दूसरे हाथ से आँख को जरा मसल देता है और दूर तक फैले हुये पेड़ों के बीच से चार सौ मील दूर राजपूताने के किसी जिले के एक छोटे से गाँव को ढूँढने का प्रयत्न करता है जहाँ उसकी बूढ़ी माँ और तीन साल की नन्हीं बहन खेमाँ रहती है।

वह सोचता है, इस समय धीसू के झोपड़े के पीछे खूब छाया होगी। खेमाँ माँ की छाती से चिपकी दूध पी रही होगी। और मैं......नाहक माँ ने मुझे यहाँ भेज दिया, और माँ के बिना मैं जो रोता हूँ। रात रात भर, यहाँ मेरे हाथों में फफोले हो गये हैं। फिर भी हथौड़ा चलाना पड़ता है। कितना दर्द होता है। माँ होती तो कह देता—'मैं हथौड़े नहीं चलाऊँगा। देख ना मेरे हाथों में छाले जो हो गये हैं। ठेकेदार तो मारने दौड़ता है जब उसे हाथ दिखाता हूँ। काश...आज मैं भी गाँव में होता !'

[२]

विधवा! वह विधवा जिसके पति ने तीस साल तक खून पानी एक करके जमींदार की खेती बोई और उसके कोठे नाज से भरे, जो अब भी भरे पड़े हैं। किन्तु उसी विधवा को उसमें से एक दाना तक लेने का अधिकार नहीं है। यह आज की सामाजिक व्यवस्था का दिवाला नहीं तो और क्या है ?

निरन्तर दो वर्ष तक पानी न बरसने से जब उस विधवा को गाँव में कोई काम नहीं मिल सका तो क्या करती ? गाँव में आये हुये ठेकेदार ने जब उसे विश्वास दिलाया—"कोई मुश्किल काम थोड़े ही है। फिर तेरा लड़का तो छोटा है। इससे कोई कठिन कार्य थोड़े ही लिया जायगा। बस योंही कुछ करता रहेगा। तेरी तक-लीफें सब दूर हो जायँगी। दस रुपये माहवार दे दिया करूँगा (दो महीने की पेशगी भी। दस रुपये हर महीने गाँव में बैठे मिल जाया करेंगे, तुझे ? फिर तेरा लड़का बाहर रहने से होशियार भी हो जायगा। यहाँ गाँव में क्या धरा है ?

उस विधावा, किन्तु मां के हृदय में दो विरोधी शक्तियों का युद्ध हुआ। एक ओर भूख दूसरी ओर ममता! वह क्या करे ? भूख और ममता! वह रो पड़ी। कुदरत ने उसे माँ क्यों बनाया ? यदि माँ बनाया तो हृदय पर पत्थर रखने को क्यों मजबूर किया ?

माँ बहुत चाहती थी कि ममता की जीत हो पर फिर भी जीत 'भूख' की हुई।

तभी कलेजे पर पत्थर रखकर अपने लाल को उस विधवा माँ ने ठेकेदार के साथ भेज दिया।

[३]

सूरज सर पर आ गया है, पत्थरों को तोड़ने की खट-खट अब भी चालू है। उस बच्चे के हाथ में अब भी हथौड़ा है, अब भी वह पत्थर तोड़ रहा है और सोचता है कुएँ के पास वाले नीम के पेड़ पर अब छोटू, जमाल, और नाथ सब 'टाँग लकड़ी' खेल रहे होंगे। मैं वहाँ होता तो मैं भी खेलता। मैं उन सबसे ऊपर चढ़ जाता नीम पर। मुझे कोई छू नहीं पाता !...

भरूँ काका कुएँ से पानी निकाल रहा होगा। अब

किशन मामा बँधे बैल को लेकर सहरण के किनारे तक पहुँच गया होगा और काका ने उसे आवाज दी होगी आ...या...रे...आ...या...

हथौड़े की कटखट बराबर धीमी पड़ती जा रही थी। तभी ठेकेदार ने ठोकर मारते हुये चिल्लाकर कहा— 'क्यों बे बकरी के बच्चे क्या नींद ले रहा है!'

वह सँभल कर फिर से पूरी ताकत के साथ हथौड़ा चलाने लगता है। उसकी हथौड़ा-थमी हथेली के किसी हिस्से से लाल पानी की बूँद रह रह कर टपकती है जो उन बेजान पत्थरों के टुकड़ों में खोती जा रही है। वह सोचता है अगर मेरी माँ मेरे पास होती...।'

[४]

निरन्तर डेढ़ साल तक उस माँ की आँखें उसी रास्ते पर लगी रहीं जिससे एक दिन ठेकेदार उसके हृदय के टुकड़े को दस रुपये माहवार पर खरीद ले गया था। पर आज तक उस विधवा को दस रुपये के नाम पर दस पैसे भी किसी ने नहीं लाकर दिये। बेबस और, क्या करे! किससे कहे? मन उसका भागूँ भागूँ करता अपने बच्चे से मिलने को। पर वह कहाँ जाये! कोई पता ठिकाना भी हो?

भूख और बच्चे के वियोग को आखिर कब तक सहती। एक दिन पाँच वर्ष की उस अबोध बालिका को अकेली छोड़ कर उस माँ को मजबूरन इस दुनियाँ से उठ जाना पड़ा।

अब उस बच्ची, उस पत्थर तोड़नेवाले भाई की उस नन्हीं बहन को भिखारी समझ कर गाँव में जो कोई जैसा कुछ दे देता है वही खा कर किसी तरह वह जिन्दा है। वह यह नहीं जानती कि उसका एक भाई है जो आजादी के लिये लड़ने वाले सैनिकों के आवागमन का रास्ता तैयार कर रहा है, पत्थर तोड़ तोड़ कर।

[५]

दिन भर पत्थर तोड़ कर जब वह उस टाट के टुकड़े पर जाकर पड़ता है तो न जाने क्यों फफोले के घाव ज्यादा दुखने लगते हैं। तब उसके उस दर्द से दिल में जो दर्द है नये सिर से शुरू होता है और वह रोता है—खूब! खूब!

"माँ अब खेमाँ को सुला रही होगी, जमाल की माँ उसके पास बैठी बता रही होगी कि किस तरह उसका वह भूरा बैल किसी पतलून पाजामा पहने आदमी को देख कर मारने दौड़ता है और कैसे उस दिन पायजामा पहने बिलायती पर वह टूट पड़ा था और उसकी सब कीमती चीजें तोड़ फोड़ दी थी। काश...इस समय मैं भी गाँव में होता, माँ के पास, एक तरफ मैं और एक तरफ खेमा सो रही होती!"

रोते रोते न जाने उसे कब नींद आ जाती है। जब ठेकेदार की ठोकर खा उठता है तो अन्धेरे की जगह उजेला दिखाई देता है, उसे।

"काम पर जाओ, आज बहुत जरूरी है, तुम्हारी रोटी वहीं आ जायगी।"

जब वह अपने घाव भरे हाथ ठेकेदार को दिखाकर रोते हुये कहता है—'मैं हथौड़े नहीं चला सकता...मुझे मेरे गाँव पहुँचा दो, मुझे मेरे गाव..."

तभी ठेकेदार उसके नन्हें किन्तु कठोर हाथ को अपने मोटे किन्तु मुलायम हाथ में लेकर मसल देता है। फफोलों से पानी बहने लगता है। एक गहरी जलन के साथ। उसकी आँखों से भी जलता हुआ पानी निकलता है और वह दूर तक फैले हुये पेड़ों के बीच से चार सौ माइल दूर राजपूताने के किसी जिले के एक छोटे से गाँव को ढूँढ़ने का प्रयत्न करता है। जहाँ उसकी बूढ़ी माँ है और तीन साल की नन्हीं बहन खेमाँ।

नारी

(संग्रहकर्ता, साँवर लाल तँवर)

मेरी प्रेयसी परमात्मा की एक सुन्दरत्तम कृति है, प्रकृति में जो कुछ दर्शनीय और शोभ युक्त है, सबका उस के जीवन में समावेश है। उसकी आंखों मे ज्योति की किरणें बिखरी पड़ती हैं। —दाते

यदि मेरे देश में सुमाताएँ हों तो मैं अपने देश को स्वर्ग बना सकता हूँ। —नेपोलियन बोना पार्ट

काँटों भरी शाखा को फूल सन्दर बना देते हैं और दरिद्र से दरिद्र मनुष्य के घर को लज्जावती स्त्री स्वर्ग समान बना देती है। —गोल्ड स्मिथ

चने की दाल की बरफी

दो सेर चने की दाल भिगो दीजिये। जब खूब अच्छी तरह भीग जाय तब उसे बारीक सी पीस लीजिये। पिस जाने के बाद चूल्हे पर कढ़ाई रक्खो और उसमें एक सेर घी छोड़ दो और फिर दाल उसी में डाल कर खूब अच्छी तरह भून लो। फिर आध सेर खोआ अलग भून लो। और उसे दाल में खूब अच्छी तरह मिलालो। अब डेढ़ सेर शक्कर की चाशनी बनाओ। जब चाशनी बन जाय तो नीचे उतार कर भुनी हुई दाल उसमें डाल दीजिये। फिर किसी बड़े बर्तन में जरा सा घी लगाकर उसमें पसार दीजिये और ठंढी होने पर काट लीजिये। बहुत बढ़िया बरफी बन जायगी।

—रतन देवी चतुर्वेदी होलीपुरा

आलू का कवाब

प्रथम आलू को उबाल लीजिये फिर उसे सिल बट्टे में महीन पीस कर नमक, मिर्च, हल्दी, मसाला, हरी धनिया, लहसुन मिला कर छोटी छोटी लोइयाँ बनाकर चपटी कर लीजिये। फिर जरा सा चावल का आटा पतला घोल कर आलू की चपटी लोई को उसमें डुबो कर तवे पर घी में तल लीजिये और गरम गरम खाइये।

—तारा देवी मिश्रा बलौदा बाजार

आलू को चरचरी

सेर भर बड़े बड़े आलू किसी बर्तन में रख कर उबाल डालो। फिर उसे छील कर गोल चक्के की तरह कई फाँक काट लो और धूप में सूखने के लिये डाल दो। सूख जाने पर एक हाँडी या डिब्बे में रख लो और जरूरत पड़ने पर पतीली में तेल या घी डाल कर तल लो। यह पूड़ी की तरह फूल आवेगी। खाने के समय बारीक पिसी मिर्च और नमक मिलाकर खाने के काम में लाओ। अक्सर ऐसा होता है कि मेहमान आगये। कोई चीज बनाने के लिये तैयार नहीं। आलू की चरचरी और चाय से उनका स्वागत करो। — श्रीमती परमेश्वरी चौधरी कानपुर

रेवती सुन्दर कैसे बनी ?

रेवती भरद्वाज मुनि की बहन थी। वह बहुत ही कुरूपा थी। उसकी बोली बड़ी ही बेसुरी थी। उसके साथ कोई विवाह करने को तैय्यार न होता था। इससे भरद्वाज मुनि बड़ी चिन्ता में पड़े। गंगा के दक्षिण तट पर बैठकर वे घंटों यही सोचा करते, इस भयंकर आकार वाली मेरी बहन का विवाह कैसे हो ? कोई भी तो इसे ग्रहण नहीं करता ! हे भगवान किसी के घर में कन्या न हो ! कन्या केवल दुख देने वाली होती है।

एक दिन वे इसी प्रकार सोच रहे थे कि एक ऋषि' कुमार उनका दर्शन करने आया। वह सुन्दर शान्त, तेजस्वी प्रतीत होता था। उसकी अवस्था कोई १६ वर्ष की थी। आते ही उसने कहा—"मेरा नाम कठ है। मैं विद्यार्थी हूँ। आप मेरे गुरू बनें मुझे विद्यायुक्त करें।

भरद्वाज मुनि ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली और उसे वेद, पुराण, स्मृति सभी कुछ पढ़ाकर पूर्ण विद्वान बना दिया। तब कठ ने कहा—"गुरुदेव ! आपको मैं क्या गुरु दक्षिणा दूं। आप निसंकोच माँगें।"

"मेरी इस कुरूपा बहन से विवाह करके इसे पत्नी का पूर्ण सुख प्रदान करो। यही दक्षिणा मैं माँगता हूँ।"

कठ ने गुरू की आज्ञा स्वीकार कर ली। और रेवती से तत्काल विवाह कर लिया। और उसके सुन्दर रूप की प्राप्ति के लिये भगवान शंकर की आराधना करने लगा।

शीघ्र ही शंकर जी प्रसन्न हुये और उनके वरदान से रेवती परम सुन्दर नारी बन गई। कहते हैं, उस ऋषि वधू के स्नान करने से जो जल की धारा प्रकट हुई वही रेवती नदी हैं। कहते हैं आज भी जो स्त्रियाँ रेवती में श्रद्धा से स्नान करती हैं वे परम सुन्दरी बन जाती हैं।

यह कथा ब्रह्म पुराण में लिखी हुई है। इसका एक संकेतिक अर्थ भी है। वह यह कि कैसी ही कुरूप स्त्री क्यों न हो, यदि उसे पति का प्रेम प्राप्त होगा तो वह क्रमशः सुन्दर बन जायगी। और इसके विपरीत बिना पति प्रेम के कालान्तर में सुन्दर स्त्री भी कुरूप हो जा सकती है।

—स्वामी भिक्षानन्द

पंजाब का हत्याकांड

पञ्जाब में पिछले दिनों जो हत्याकांड हुआ है, उससे हमें सबक लेने की जरूरत है। इस हत्याकांड से एक बात यह स्पष्ट हो जाती है कि जहाँ भी मुसलिम लीग को अपना घृणा का प्रचार करने की छूट मिलेगी वहाँ रहने वाले गैर मुस्लिमों खास कर ,हिन्दुओं और सिखों पर जो जुल्म न हो जाय, थोड़ा है। मुस्लिम लीगियों को यह स्वतन्त्रता बङ्गाल में मिली और कलकत्ता और नोआखाली में पशुता को भी लज्जित करने वाले जघन्य पाप हुये। यही स्वाधीनता उनको ंजाब में मिली और स्वर्ग के समान वह सुन्दर प्रदेश नर्क बन गया। ऐसा हम कब तक होने देंगे ?

लीग के भड़काने में ही आकर दोनों जगह मुसलमानों ने हिन्दुओं का घर फूँका, उनका माल असबाब लूटा, उनको और उनके बच्चों को कत्ल किया, उनकी स्त्रियों का अपहरण किया, जबरदस्ती उन्हें मुसलमान बनाया। इसकी प्रतिक्रिया बिहार में हुई और अन्यत्र भी हो सकती है। बिहार में हिन्दुओं पर गोली बरसा कर इस प्रकार बदला लेने से रोका गया। अन्यत्र भी उन्हें इसी प्रकार रोका जायगा। यह ठीक है। लीग के भड़काने के कारण मुसलमानों पर पागलपन सवार हो जाय तो भी हिन्दुओं को अक्ल ठीक रखनी चाहिये। बेकसूर मारे जाने वालों का बदला बेकसूरों को मार कर नहीं लेना चाहिये। परन्तु जहाँ हम हिन्दुओं को धैर्य्य और संयम का उपदेश देते हैं, जहाँ हमारी राष्ट्रीय सरकारें गोली बरसा कर उन्हें तुरन्त शान्त कर देती हैं, वहाँ उनका यह भी फर्ज है कि वे लीगियों की इस गुंडागिरी से बेकसूर हिन्दुओं और सिखों की रक्षा करें। और हम पूछना चाहते हैं कि इसके लिये हमारी राष्ट्रीय सरकारों ने क्या किया है और वे क्या करने जा रही हैं ? बङ्गाल और पंजाब की तरह लीगियों ने अब सीमा प्रान्त और आसाम में भी प्रचार कार्य्य शुरू किया हैं। वहाँ भी हिन्दुओं पर यह संकट आ सकता ? उसका उपाय अभी से सोचा जाना चाहिये। ऐसा न हो कि बङ्गाल पंजाब और सिन्ध आदि में जो हिन्दू और सिख हैं वे सब कत्ल कर डाले जायँ या मुसलमान बना लिये जायँ और हम उपाय ही सोचते रह जायँ ?

'दीदी' सहायक कोष

'दीदी' की सुन्दर और अपटूडेट छपाई के लिये हम 'दीदी' प्रेस को सुदृढ़ बनाना चाहते हैं। इसके लिये हमें कम से कम दस हजार रुपयों की जरूरत है। अतएव हमने 'दीदी' सहायक कोष की स्थापना की है। ये रुपये हम दान नहीं, कर्ज के रूप में चाहते हैं। हमारे जो भी पाठक या पाठिकाएँ कम से कम १००) भी कर्ज दे सकें उनसे निवेदन है कि वे तुरन्त यह रकम भेजकर हमारी सहायता करें। जो १००) से अधिक का कर्ज दे सकते हैं वे अधिक भी भेजने की कृपा करें। कर्ज की प्रत्येक रकम 'दीदी' के पृष्ठों में स्वीकार की जायगी और अलग से भी रसीद भेजी जायगी और ,दीदी' कर्ज देने वाले भाई बहनों को ५) सैकड़ा सालाना व्याज देगी। कर्ज की ये रकमें हम अधिक से अधिक पाँच वर्ष के अन्दर व्याज सहित वापस कर देंगे पर जो चाहेंगे वे बीच में भी और चाहे जब अपना रुपया वापस पा सकेंगे। प्रति वर्ष इसका हिसाब 'दीदी' में प्रकाशित किया जायगा।

इस प्रकार प्रेस स्थापित हो जाने पर हम एक ही साल के अन्दर 'दीदी' की पृष्ठ संख्या दूनी कर देंगे, और इसकी छपाई सफाई अद्वितीय हो जायगी। बहनों की सेवा का यह पुण्य कार्य्य है और रुपया डूबने का कतई अन्देशा नहीं है।

आशा है 'दीदी' की उन्नति चाहने वाले भाई बहन तुरन्त अपनी सहायता का हाथ बढ़ावेंगे।

यदि चेक भेजें तो उसे क्रास कर दें और उसे 'दीदी' कार्य्यालय के नाम भेजें और यदि मनिआर्डर भेजें तो उसे सञ्चालिका के नाम भेजें।

निवेदक—
श्रीनाथसिंह

सिन्ध में पर्दा

सिन्ध में वहाँ के अंग्रेज गवर्नर की शरारतों के परिणाम स्वरूप मुसलिम लीग की सरकार कायम हो गई है। लीग की इस मिनिस्ट्री ने अब वहाँ खुल्लम खुवा इस्लाम का प्रचार करना और गैर मुसलिमों को सताना शुरू कर दिया है। सिन्ध की असेम्बली में स्त्रियों को परदे में बैठाने की व्यवस्था करना उनके इसी उद्देश्य के अन्तरगत है। लीगियों को हक है कि वे अपबी स्त्रियों को परदे में बैठावें और वे इसके लिये कुछ भी व्यवस्था करने को स्वतन्त्र हैं। परन्तु उन स्त्रियों को जो परदे में विश्वास नहीं करतीं, परदे से बाहर बैठने की व्यवस्था होनी चाहिये।

स्कूली किताबों के प्रकाकश

यू० पी० में स्कूली किताबों के प्रकाशकों ने पिछले दिनों बड़ी मनमानियाँ की हैं। उन्हेंाने रद्दी से रद्दी किताबें निकाली हैं और मँहगे से मँहगे दाम पर बेच कर मालामाल हुये हैं। यू० पी० में मिनिस्ट्री कायम होते ही इन पंक्तियों के लेखक ने शिक्षा मन्त्री माननीय बाबू सम्पूर्णानन्द जी से मिलकर उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था। और उन्होंने कहा था कि स्कूली किताबों का प्रकाशन सरकार स्वयं करेगी। यह हर्ष का विषय है कि वे सरकार के उस विचार को अब कार्य्य का रूप देने जा रहे हैं। प्रान्त में सुशिक्षा के प्रसार के लिये यह जरूरी था कि सरकार इस कार्य्य को स्वयं अपने हाथ में लें। अब सुनते हैं कि स्कूली किताबों के ये प्रकाशक उन्हें कोस रहे हैं और सत्याग्रह की धमकी दे रहे हैं। आशा है कि बाबू सम्पूर्णानन्द जी लोक हित को ध्यान में रखेंगे और इन धमकियों की परवा न करेंगे।

एक पिता का पत्र

एक दुखी पिता का पत्र नीचे दिया जाता है—'मैं जिला इटावा, पोस्ट वकेवर, ग्राम शेरपुर का हरकृष्ण नाम का गरीब किसान ब्राह्मण हूँ। मैंने सन् १६४४ फरवरी में अपनी लड़की फूलनदेवी का विवाह कानपुर शीशामऊ निवासी पं० चन्द्रकाप्रसाद वैद्य के लड़के ओंकार नाथ के साथ किया था। उसमें भी अपनी हैसियत के मुताबिक जो कुछ बना वह उनको दिया। लेकिन वह नाराज ही रहे। तब से आज तक (सन् ४७) मैं बराबर उनके दरवाजे उनके नाते दारों दोस्तों और भले आदिमियों को लेकर गया लेकिन न उन्होंने बात की और न लड़की को दिखाया। अब वह लड़की को बड़ा कष्ट दे रहे हैं। खाने को भी व कपड़ों को दुखी रखते हैं। और उसको रोज कटु वचनों से अपमानित करते हैं। मेरे वही मात्र अगाड़ी के लिये उत्तराधिकारी है क्योंकि मेरा लड़ा फौत हो गया है। इसलिये मैं आशा करता हूँ कि आप कुछ उपाय बताबेंगो और इस लेख को दीदी में स्थान देंगी।'

मन चाहा दहेज न पाने पर अनेक लोग कन्याओं को प्रताड़ित करते हैं और उनके पिताओं का बदला उनसे निकालते हैं। पत्र लेखक को हम क्या सलाह दें। वे अपने जातिभाइयों से अपने ऐसे सम्बन्धियों पर जोर डलवाएँ या उनके दरवाजे पर जाकर व्यक्तिगत सत्याग्रह करें। कहें कि जब तक आप मेरी कन्या को मुझसे मिलने न देगें, मैं उपवास जारी रखूँगा। सम्भव है वे इससे कुछ पसीजें।

अखबारी कागज से कंट्रोल हटा

इस महीने की पहली तारीख से अखबारी कागज से कन्ट्रोल हट रहा है। यह अप्रेल की पहली तारीख है। हो सकता है कि भारत सरकार के सप्लाई विभाग ने हम अखबार वालों को अप्रेल फूल बनाया हो और आगे चल कर कागज की हालत और भी खराब हो जाय। पर कन्ट्रोल हटा, इसी खुशी में हम और सब कुछ भूले हुये हैं।

'दीदी' के नए ग्राहक

कागज पर से कंट्रोल हट जाने से हम 'दीदी' की पृष्ठ संख्या बढ़ाने और उसका अधिकाधिक प्रचार करने की स्कीम बना रहे हैं। अब तक हम 'दीद' के नये ग्राहक बहुत नहीं बना रहे थे। अब मार्ग खुल गया है। अब जो भी चाहें किसी भी महीने से ३) वार्षिक मूल्य भेज कर 'दीदी' के ग्राहक बन सकते हैं।

राष्ट्रीय पहेली का उत्तर

१. जवाहर, जयहिन्द २. बाज ३. रमनी ४. रोष, रोला ५. जन ६. शापमोचन ७. दहन ८. नद ६. पछला १०. मदनमोहन, मदुरा ११. नस १२. खराब १३. नचाना।

—मैनेजर

दीदी कार्य्यालय की पुस्तकें

प्रजामण्डल १।।)

यह श्री श्रीनाथसिंह लिखित मौलिक और सनसनीदार घटनाओं से भरा उपन्यास है। समालोचकों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। एक सम्मति हम यहां देते हैं—

"श्री कन्हैयालाल मुन्शी के गुजराती उपन्यास के बाद रियासती समस्या को लेकर यह दूसरा उपन्यास हमारे पढ़ने में आया है। और यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं कि कथानक के चुनाव, उद्देश्य की स्पष्टता, वस्तु स्थिति के चित्रण आदि सभी में श्रीनाथसिंह का यह उपन्यास मुन्शी के उपन्यास से कहीं अधिक ऊँचा स्थान रखता है। पुस्तक रोचक इतनी है कि एक सांस में ही पढ़ जाने को जी करता है। —'विश्ववाणी'

एक और अनेक १।।)

यह भी श्रीनाथसिंह लिखित मौलिक सामाजिक उपन्यास है।

इसमें लेखक ने बड़ी सुन्दरता से एक धनी और बूढ़े सेठ की कहानी लिखी है जिसकी उच्च शिक्षिता भारतीय ललनाओं से शादी करने की हवस किसी तरह पूरी नहीं होती। पढ़ी लिखी स्त्रियाँ धन के लालच में आकर किस प्रकार बूढ़ों के चंगुल के फँस जाती हैं, यह इसमें पढ़िये। प्रत्येक भारतीय स्त्री और पुरुष को यह उपन्यास पढ़ना चाहिये।

नयनतारा १।।)

यह श्री श्रीनाथसिंह लिखित १६ चुनी हुई कहानियों का अद्‌भुत संग्रह है। समालोचकों ने इसकी बहुत ही अधिक तारीफ की है! हिन्दी में इनके टक्कर की कहानियाँ नहीं हैं। स्थानाभाव के कारण सिर्फ एक सम्मति यहां देते हैं—

"श्री श्रीनाथसिंह हिन्दी के विख्यात पत्रकार और कहानीकार हैं। नयनतारा उनकी १६ कहानियों का संग्रह है। ठाकुर साहब ने समाज की प्रायः चलती हुई समस्यायें उठाई हैं और उन्हें घटना-चक्र में बांध कर हमारे सामने रखा है। 'नयनतारा' में एक गरीब के विद्रोह का जो स्वरूप रखा गया है, वह साहसिक है। 'सांप से मुठभेड़' नामक कहानी में उत्सुकता बढ़ाने में लेखक काफी सफल हैं और उसमें अन्त में पुलीस पर जो कठोर व्यङ्ग है वह बहुत ही चुटीला है। अन्य कहानियां प्रेम को लेकर लिखी गई हैं। ठाकुर श्रीनाथसिंह जी की भाषा मँजी हुई, और शैली मनोरञ्जक होती है। कहानियों का जो मुख्य गुण है—परिणाम जानने की उत्सुकता और मनोरञ्जकता—वह इनमें है। इस दृष्टि से कहानी-प्रेमियों को यह रुचिकर प्रतीत होगा।" 'संसार', बनारस

नोट—डाक व्यय अलग से।

सती पद्मिनी ।≈)

यह श्री श्रीनाथसिंह लिखित खण्ड काव्य है। ललित छन्दों में सती पद्मिनी की कथा वर्णित है।

केश विन्यास ।।)

बालों को कैसे बढ़ाना चाहिये, उनकी रक्षा कैसे करनी चाहिये, उनको कैसे सँवारना चाहिये आदि बातें जानना चाहें तो यह पुस्तक पढ़ें। स्त्रियों के लिये यह बड़े काम की है। सब बातें चित्रों द्वारा समझाई गई हैं।

स्वास्थ्य और सौन्दर्य्य ।।)

यह पुस्तक खास तौर से स्त्रियों के लिये लिखी गई है। वे किस प्रकार अपना स्वास्थ्य कायम रख सकती हैं और अपनी सुन्दरता बढ़ा सकती हैं यह इसमें चित्रों सहित बहुत ही सरल और दिलचस्प हिन्दी में समझाया गया है।

दिव्य-देवियां १।।≈)

इसमें सीता, सावित्री, शैव्या, सती, दमयन्ती, सुनीति, प्रमीला उत्तरा और गान्धारी इन ९ आदर्श नारियों की कथा बहुत सुन्दर ढङ्ग से लिखी गई है। प्रत्येक कथा स्त्रियों के हृदय पर आदर्श पूर्ण प्रभाव डालती है। और ये कथायें रोचक इतनी हैं कि इन्हें शुरू करने पर बिना समाप्त किये जी नहीं मानता और सरल इतनी है कि मामूली पढ़ी स्त्रियां भी इन्हें पढ़ सकती हैं और इनका आनन्द ले सकती हैं।

मिलने का पता—मैनेजर 'दीदी' कार्य्यालय इलाहाबाद

Registered No. A—691.

Printed and published by Shrinath Singh at the Didi Press, Katra, A[illegible]d.